ISSN 2349-6614

जून-जुलाई 2020

मूल्य 50 रु

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

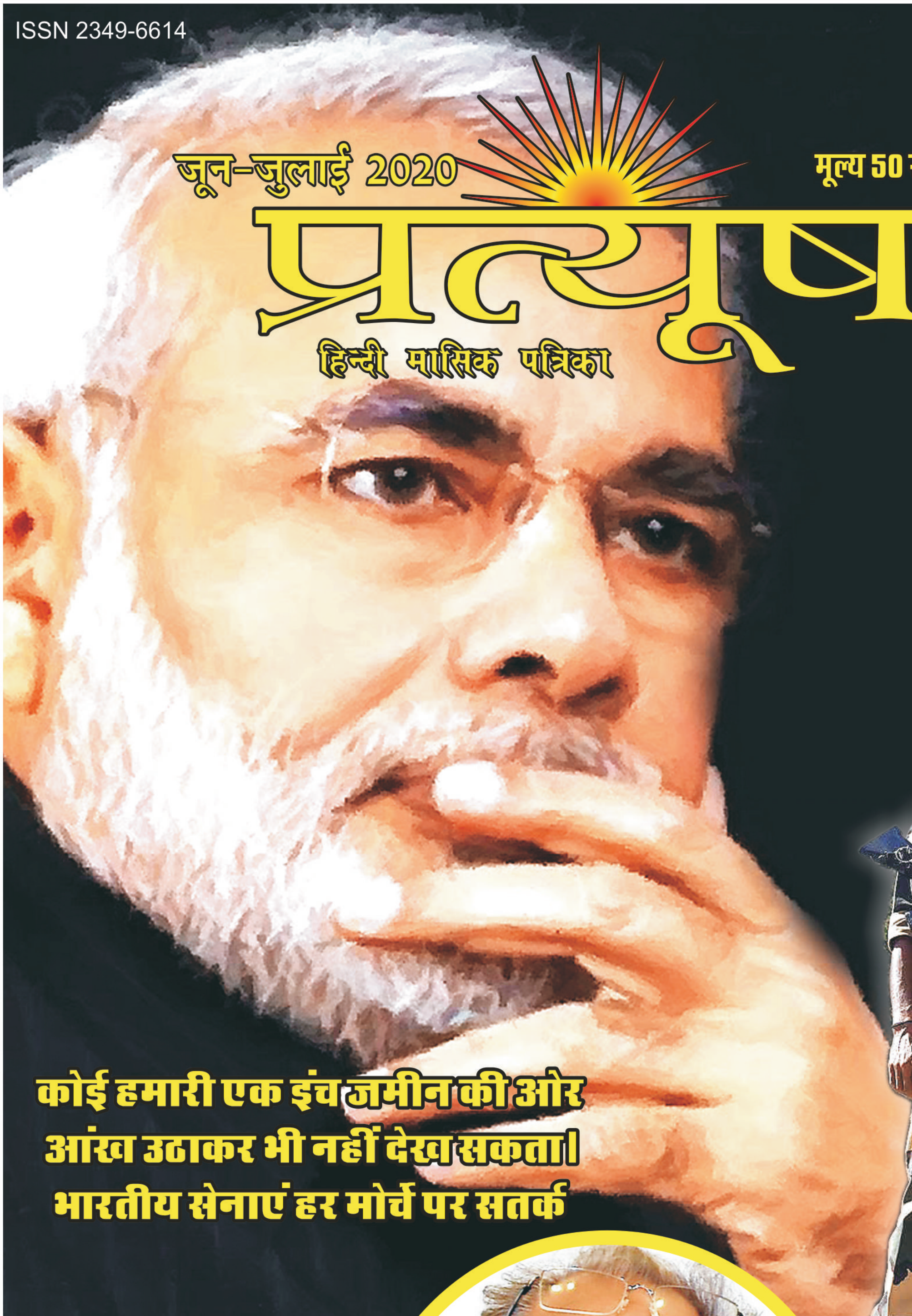

कोई हमारी एक इंच जमीन की ओर आंख उठाकर भी नहीं देख सकता। भारतीय सेनाएं हर मोर्चे पर सतर्क

कोरोना नियंत्रण में राजस्थान की प्रभावी पहल

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 18 अंक 2-3 Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2018-2020 Posting Date : 27th-28th of Every Month RNI No. : RAJHIN/2003/9297 Posting Office : Chetak Circle, Udaipur

The Icon to Luxuriate

SHIVA export company

8, Bhatt Ji ki Bari, Udaipur-313001, Rajasthan, INDIA
Tel. : +91-294-2418228, Fax : +91-294-2414643
Cell : +91 99280 37747, 96800 02120
E-mail : shivaexport@gmail.com | Website : www.shivaexport.in

जून-जुलाई
2020
वर्ष 18, अंक 2-3

प्रत्यूष

मूल्य 50 रू
वार्षिक 600 रू

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं
तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर
मदन, भूमिका, उषा
चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

कम्प्यूटर ग्राफिक्स Supreme Designs
विकास सुहालका

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी, कुलदीप इन्दौरा
कृष्ण कुमार हरितवाल, धीरज गुर्जर, अभय जैन
गजेन्द्र सिंह शक्तावत, लाल सिंह झाला
ओम शर्मा, अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुन्दरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कुमावत, जितेन्द्र कुमावत,
ललित कुमावत

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

अन्दर के पृष्ठों पर...

वन्य प्राणी
12 गौरी घाटी में स्नो लेपर्ड की चहल कदमी

स्मृतिशेष
15 सुशांत की मौत एक चुनौती कुछ सवाल

सुरक्षा
29 सुखोई की निगरानी में हिन्द महासागर

अर्थक्षेत्र
31 कोरोना से अर्थव्यवस्था पस्त बाजारों में कोहराम

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्सः 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. एम.आई.ए., उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी उदयपुर से प्रकाशित।

RK GROUP
विद्या भवन
मजबूत इरादों से करो
हर नई शुरुआत
WONDER CEMENT
EK PERFECT SHURUAAT
वंडर सीमेंट
PORTLAND POZZOLANA CEMENT (FLY ASH BASED)
WONDER CEMENT
EK PERFECT SHURUAAT
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: 1800 31 31 31
लॉग इन करें: www.wondercement.com

चीन को घुटनों पर लाना होगा

भारत–चीन सीमा पर भारतीय क्षेत्र गलवान घाटी में चीन पिछले दो महीनों से लगातार तनाव बढ़ाने तो दूसरी तरफ द्विपक्षीय बातचीत का ढोंग करता रहा है। उसका यह दोगलापन पहली बार नहीं है, इससे पहले भी उसकी धोखेबाजी का भारत शिकार हुआ है। उसका हर उस देश से दोगला व्यवहार है, जिनसे उसकी सीमाएं मिलती हैं। बातचीत का प्रस्ताव भी करता है और बातचीत को खुद तोड़ता भी है। पूर्वी लद्दाख की गलवान घाटी में दोनों पक्षों के बीच एलएसी से पीछे लौटने की बात तय हो गई थी। लौटते हुए भारतीय सैनिकों पर चीनी सैनिक 15 जून की रात एकाएक आक्रामक हो उठे। जिसमें हमारे 20 जवान शहीद हुए। हालांकि भारत की ओर से भी उन्हें उनकी करतूत का करारा जवाब मिला और 40 से अधिक चीनी सैनिक मारे गए।

भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद से ही चीन हमारे लिए सामरिक चुनौती रहा है। नव स्वतंत्र भारत ने यदि 1950 में उसकी विस्तारवादी नीति को ब्रेक लगा दिया होता तो वह बार–बार हमलावर होने की जुर्रत नहीं करता। तब हमने सोचा था कि दोनों ही पड़ौसी विकासशील देश हैं, दोनों में शांति और समन्वय रहना चाहिए, किन्तु तभी धोखेबाज इस राष्ट्र ने भारत के 'अक्साई चिन' क्षेत्र पर कब्जा कर लिया। इसके बाद से ही उससे हमारा सीमा विवाद है। चीन ने बाद में 'हिन्दी–चीनी भाई–भाई' और पंचशील के नारे और सिद्धान्तों के बीच भारत की ओर फिर दोस्ती का हाथ बढ़ाया और उसके कुछ ही साल बाद 1962 में अकस्मात फिर हमला बोल दिया, जिसमें हमें भारी नुकसान उठाना पड़ा। चीन–भारत युद्ध के बाद वास्तविक नियंत्रण रेखा पर दो और बड़ी हिंसक घटनाएं हुईं। पहली वर्ष 1967 में सिक्किम में हुई, जिसमें हमारे 88 सैनिक शहीद हुए जबकि 300 से अधिक चीनी सैनिकों को भी जान से हाथ धोना पड़ा। दूसरी झड़प 1975 में अरुणाचल प्रदेश में हुई। इन घटनाओं के 45 वर्ष बाद चीन 2020 में फिर आक्रामक हुआ है और उसने गलवान घाटी पर अपनी संप्रभुता का दावा ठोका है।

सन् 2013 में जब मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री थे, तब भी चीन ने लद्दाख के देपसांग में घुसपैठ की थी। इस बार भी उसने लद्दाख के उन इलाकों का अतिक्रमण किया है जो भारत के लिए सुरक्षा की दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण हैं। असल में चीनी राष्ट्रपति शी झिनपिंग उस दौर में आक्रामकता बढ़ा रहे हैं, जब पूरा विश्व उन्हीं के वुहान शहर से निकले कोरोना वायरस की जानलेवा आपदा से जूझ रहा है। लाखों लोग असमय मौत के शिकार हो गये और लाखों अस्पतालों–घरों में सांसें गिन रहे हैं। अर्थव्यवस्था चौपट हो गई है। शी के मन्सूबे अप्रैल में उनके इस भाषण से ही साफ जाहिर हो गए थे कि – 'इतिहास में प्रवर्तनकारी कदम किसी बड़े संकट के दौरान ही उठते हैं।' हांगकांग और ताइवान से लेकर दक्षिणी एवं पूर्वी चीन सागर और हिमालयी क्षेत्र में भारत के साथ टकराव को लेकर चीन के रूख ने शी के भाषण को अर्थ भी दे दिया है।

सन् 1962 वाला विस्तारवादी चीन अब नए किस्म का साम्राज्यवादी चीन है, जो अपने यहां उत्पादित माल की खपत के लिए दुनियाभर में संजाल बिछा चुका है और जहां नहीं बिछा पाया, वहां बिछाने के चक्कर में है। भारत उसके संजाल का विरोधी है, इसीलिए वह उसके टारगेट पर है। गलवान घाटी की हिंसा इसी का नतीजा है। चीन के इतिहास को देखते हुए बेहद सतर्क रहने की ज़रूरत है। सीमा पर कड़ी चौकसी और हर स्थिति से निपटने की पूरी तैयारी के साथ शीर्ष स्तर पर कूटनीतिक पहल होनी चाहिए। चीन शांतिपूर्ण समाधान की दलीलों के बीच पीठ पर वार करता आया है। हमारे शहीदों का बलिदान अकारथ नहीं जा सकता। चीन को इस बार ऐसा जवाब मिलना चाहिए कि वह 'दादागिरी' से तौबा कर भारत के समक्ष दण्डवत होने को मजबूर हो जाए। हालांकि इसके लिए हमें आर्थिक और सामरिक मोर्चे पर पूरी कुशलता के साथ रणनीति बनानी होगी। चीन के आयात को कम करके हम उसकी रीढ़ को कमजोर तो कर सकते हैं, लेकिन उसका हम पर क्या और कैसा प्रभाव पड़ेगा, इस पर गहनता से मंथन के साथ–साथ अपनी ज़रूरतों को खुद अपने स्तर पर पूरा करने की तैयारी भी होनी चाहिए।

भारत और चीन एशिया की दो बड़ी ताकतें हैं। यदि वे आपस में टकराती हैं तो इससे पूरे महाद्वीप में अस्थिरता का माहौल बनेगा। चीन इस बात को नहीं समझ रहा। वह तो भारत से अपने यहां पहुंचे भगवान बुद्ध के शांति और अहिंसा के संदेश को भी भूल गया है। दोनों ही देशों को विवाद से बचने और तनाव को कम करने के प्रयास करने होंगे। तनाव और विवाद की पहल चीन की ओर से हुई है, अतएव यह जिम्मेदारी भी उसी की है कि वह एलएसी से पीछे हट जाए और सामरिक समझदारी को फिर से बहाल करे। बीजिंग को यह समझ लेना चाहिए कि उसकी कोशिश 1962 में भले ही चल गई, लेकिन अब नहीं चलेगी। यदि हठ नहीं छोड़ी तो उसे घुटने पर भी भारत को अब आता है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 19 जून को सर्वदलीय बैठक में बताया कि देश की एक इंच जमीन पर भी कोई टेढ़ी नजर से नहीं देख सकता। चीन न सरहद में घुस पाया और न ही किसी चौकी पर कब्जा कर सका है। हम अपनी सीमाओं की सुरक्षा करने में पूरी तरह समर्थ हैं। सभी दलों के नेताओं ने प्रधानमंत्री को आश्वस्त किया कि वे सब और पूरा देश उनके साथ एकजुट खड़ा है।

Welcome in the world of comfort

SUNIL GARMENTS

SUNIL TEXTILES

Dangi Saree's

With an exclusive range of

- Suiting
- Shirting
- Suitlengths
- Shawls
- Blankets
- Bedsheets

Exclusive Readymade Brands

- Kurtis

Party Wear

- Sarees & Lehangas

61, NORTH SUNDERWAS, UDAIPUR : 9414169044

कोरोना बड़ी चुनौती घबराएं नहीं बचाव के उपायों पर दें ध्यान

सबसे बुरा रोग वो होता है, जो आदमी को भीतर तक भयभीत कर देता है। फिलहाल कोरोना वायरस वही कर रहा है। उससे घबराएं नहीं, लक्षण दिखते ही जांच कराएं और बचाव के उपायों पर ध्यान दें। डब्ल्यूएचओ(विश्व स्वास्थ्य संगठन) ने कोरोना वायरस को वैश्विक महामारी और भारत सरकार ने राष्ट्रीय आपदा घोषित कर दिया है। चीन में लगभग 5 हजार से अधिक लोगों को मौत की नींद सुला चुकी यह बीमारी चीन की सीमा को लांघती हुई डेढ़ सौ देशों को अपनी जद में लेते हुए बढ़ रही है। ब्राजील, इंग्लैण्ड, स्पेन और इटली सहित कुछ देशों में हालात चिंताजनक बने हुए हैं। भारत सरकार ने भी विदेशों में शिक्षण प्रशिक्षण अथवा अस्थाई रूप से रोजगार के लिए गए अपने नागरिकों को स्वदेश लाने और उनके इलाज समेत देश में जिलास्तर तक व्यापक बन्दोबस्त किए हैं। प्रधानमंत्री ने पड़ोसी राष्ट्रों(सार्क देशों) के प्रमुखों से भी वार्ता की पहल कर आपातकालीन कोष के गठन का आव्हान किया। जिसमें भारत का योगदान एक करोड़ डॉलर होगा।

✍ शिल्पा नागदा

कोरोना विषाणु पशुजन्य हैं। कोरोना, विषाणुओं के उस बड़े परिवार का हिस्सा है जिसके कारण सामान्य ठंड से शुरू होकर गंभीर बीमारी तक हो सकती है। मिडिल ईस्ट रेस्परेटॉरी सिंड्रोम(एमईआरएस-कोव) और सिवियर एक्यूट रेस्परेटॉरी सिंड्रोम(एसआरएस-कोव), ऐसी ही बीमारियां हैं। नोबल कोरोना वायरस(एन-कोव) एक नई चिंता बढ़ाने वाली बीमारी है, जिसका प्रभाव इससे पहले कभी मनुष्य के ऊपर नहीं देखा गया था। एसआरएस-कोव गंधबिलाव या बिलास कस्तूरी से मनुष्य तक पहुंचता है, जबकि एमईआरएस-कोव ऊंटों से मनुष्य तक पहुंचता है, जबकि एमईआरएस-कोव ऊंटों से मनुष्य तक पहुंचता है। कोरोना विषाणु से संक्रमित होने वालों की संख्या देखते-देखते काफी बढ़ गई है। इसका प्रसार तेजी से विश्व के विभिन्न हिस्सों में हुआ है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अब तक 160 से अधिक देशों में एक करोड़ मामलों की पुष्टि की है। इससे प्रभावित होने वाले देशों की संख्या और बढ़ सकती है।

अमेरिका में इसका असर सबसे ज्यादा हुआ है। यहां अब तक कोरोना संक्रमण के 24 लाख मामले सामने आए हैं, वहीं इससे 1 लाख 25 हजार से अधिक लोगों की जान जा चुकी है। इसके बाद कोरोना का सर्वाधिक प्रभाव ब्राजील में देखने को मिला है। वहां दस लाख मामले सामने आए हैं, जबकि इससे होने वाली मौतों की संख्या 50 हजार से अधिक है। कोरोना के कारण खासी परेशानी झेल रहे देशों में इटली भी है। वहां कोरोना संक्रमण के अब तक 2,40,000 से अधिक मामले सामने आए हैं, जबकि 35,000 से अधिक लोगों की जान जा चुकी हैं। स्पेन में ऐसे 2,93,000 मामले प्रकाश में हैं। वहां अब तक 28,000

कोरोना के संक्रमण को देखते हुए सभी जगह स्थानीय प्रशासन ने हेल्पलाइन नंबर जारी किया है। आप उस पर फोन कर स्वास्थ्य सम्बन्धी बदलाव के बारे में बताएं। साथ ही जांच कराने की मांग करें। एम्बुलेंस से आपको अस्पताल ले जाया जाएगा और वहां जांच के लिए नमूने लिए जाएंगे। ये नमूने अत्याधुनिक प्रयोगशाला के लिए भेजे जाते हैं, जहां परीक्षण के बाद पता चलेगा कि आपको संक्रमण है या नहीं।

मौतें हो चुकी हैं। फ्रांस और जर्मनी में क्रमशः 1,90,000 और 1,87,000 मामले हैं, जबकि इनमें अब तक 30,000 और 10,000 लोग जान गंवा चुके हैं। प्रभावित होने वाले देशों में इंग्लैण्ड तीसरे नम्बर पर है। जहां कुल सक्रंमितों की संख्या 3 लाख 5 हजार है और 43 हजार लोग मारे जा चुके हैं। चीन से यह जानलेवा वायरस निकला। उसने संक्रमण से होने वाली मौतों को छिपाया। वह इससे मरने वालों की संख्या मात्र 6 हजार के आस-पास बता रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने कोरोना वायरस के खतरे को महामारी करार दिया है। डब्ल्यूएचओ के मुताबिक दुनियाभर में कोरोना से अब तक 4 लाख 90 हजार से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है। फिलहाल जो सूरते हाल है, उसमें विश्व में कई हजार कोरोनो संक्रमित लोगों को विशेष निगरानी में रखा गया है। भारत में संक्रमितों की संख्या 3 लाख 90 हजार है। मौतें 16 हजार हो चुकी हैं। कुल संक्रमितों में से 12 लाख 20 हजार से अधिक लोग स्वस्थ हुए हैं।

कोरोना के लक्षण

कोरोना संक्रमण के लक्षणों में बुखार, कफ, सांस लेने में तकलीफ या कम सांस ले पाना सबसे अहम है। गंभीर मामलों में निमोनिया, सिवियर एक्यूट रेस्परेटॉरी सिंड्रोम(एसआरएस सिंड्रोम) और किडनी के नाकाम होने से लेकर मौत तक की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है।

कोई टीका नहीं

कोरोना वायरस(कोविड-19) से बचाव के लिए अब तक कोई टीका नहीं है। हालांकि भारत सहित दुनिया के अन्य विकसित राष्ट्रों के वैज्ञानिक इस दिशा में रात-दिन काम कर रहे हैं, इससे बचाव का सबसे बेहतर तरीका यही है कि हम इसके विषाणुओं से खुद को दूर रखने के लिए हरसंभव परहेज पर ध्यान दें। यह विषाणु एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुंचता है, इसलिए हमें इस पर खास ध्यान देने की जरूरत है। हम लोगों से कम से कम छह फीट की दूरी बनाकर रहें या काम करें। छींक या कफ के जरिए भी कोरोना संक्रमण एक से दूसरे व्यक्ति तक पहुंचता है।

संक्रमण से बचाव

- अपने हाथों को बराबर साफ करते रहें। हाथों को कम से 20 सेकंड तक साबुन और पानी से बराबर साफ करें। सार्वजनिक स्थलों पर रहने पर या छींक अथवा कफ आने के बाद ऐसा बार-बार करें।
- अगर साबुन और पानी उपलब्ध न हों तो हैंड सेनिटाइजर का इस्तेमाल करें, जिसमें कम से कम 60 फीसद अल्कोहल की मात्रा हो। इसका इस्तेमाल अच्छी तरह पूरे हाथ पर करें और इसे लगाकर हाथ तब तक मलते रहें, जब तक वह पूरी तरह सूख न जाएं।
- बिना धुले हाथ से आंख, नाक और मुंह को न छुएं।
- लोगों के ज्यादा नजदीक न जाएं। बीमार लोगों से परहेज बरतें।
- सामुदायिक क्षेत्र में कोरोना संक्रमण फैल रहा है तो विशेष संयम बरतें। खासकर वैसे लोग जिनके बीमारी होने का खतरा सर्वाधिक होता है।

बीमार होने और न होने की स्थिति में

- अगर आपको स्वास्थ्य निगरानी में नहीं रखा गया है तो घर पर ही रहें।
- छींक और कफ को बाहर फैलने से रोकें।
- इस्तेमाल किए गए टिश्यूज को सावधानी से कूड़ेदान में फेंके। अगर आप बीमार हैं तो फेस मास्क जरूर पहनें। अगर सांस लेने में तकलीफ के कारण आप फेस मास्क नहीं पहनना चाहते तो ध्यान रखें कि आपकी छींक और कफ के संपर्क में दूसरे लोग न आएं।
- अगर आप बीमार नहीं हैं तो फेस मास्क पहनने की जरूरत नहीं है। हां, तब भी आप खुद को स्वच्छ बनाए रखने पर जरूर ध्यान दें।
- आपको यह भी ध्यान रखना होगा कि जिन चीजों को आप बार-बार इस्तेमाल करते हैं या छूते हों, वे भी पूरी तरह स्वच्छ हों। मसलन-फोन, कीबोर्ड, स्विचबोर्ड, टेबल-कुर्सी, रेलिंग, दरवाजों के हेंडल आदि।

स्वाइन फ्लू की तरह यह भी घातक

स्वाइन फ्लू एच-1-एन-1 की तरह कोरोना भी घातक महामारी के रूप में सामने आई है। एच-1-एन-1 स्वाइन फ्लू ने कई देशों में गंभीर संकट पैदा कर दिया था। इससे करीब 5.75 लाख लोगो की जान चली गई थी। इसके अलावा इबोला, सार्स, निपाह और जीका वायरस के फैलने से भी दुनिया भर में हड़कंप मच गया था।

स्वाइन फ्लू

2009-10 के दौरान स्वाइन फ्लू एच-1-एन-1 56 देशों में फैला था। इससे छह करोड़ से ज्यादा लोग प्रभावित हुए। वैश्विक अर्थव्यवस्था को चार लाख करोड़ डॉलर का नुकसान हुआ।

कोरोना वायरस

दिसम्बर-2019 में चीन के वुहान से फैला। 160 देशों के 2 लाख से अधिक नागरिक इसकी चपेट में आ चुके हैं। 4,623 मरीजों की मौत हो गई है।

इबोला

2014 में जब दुनियाभर में इबोला महामारी ने दस्तक दी तो 26,800 लोगों को प्रभावित किया, जिसमें 40 फीसदी लोग मारे गए। 220 करोड़ डॉलर का आर्थिक नुकसान हुआ। द. अफ्रीका के कांगो शहर में इसके पुनर्प्रभाव की खबरें भी हैं।

जीका

2015-2017 में सामने आया जीका वायरस 87 देशों में फैला। दक्षिणी अमेरिका और कैरेबियाई द्वीप को 1800 करोड़ डॉलर का नुकसान हुआ।

निपाह

निपाह वायरस से 2018-19 में भारत के केरल में 753 लोगों को निगरानी में रखा गया था, जिनमें से 17 लोगों की मौत हो गई थी।

सार्स

यह वायरस 2003 में चीन से फैला था। उसकी वजह से 1500 से 2000 लोगों की जान गई थी, सात माह में काबू हुआ था। 1480 करोड़ डॉलर का नुकसान अकेले चीनी अर्थव्यवस्था पर हुआ।

'औरों के मुकाबले कोरोना वायरस तेजी से फैलता है'

एम्स के मेडिसन विभाग के प्रोफेसर और जीका, निपाह जैसे वायरसों पर देशभर में काम करने वाले डॉक्टर आशुतोष बिश्वास के मुताबिक जीका वायरस तो मच्छर के काटने से फैल रहा है। यह चिकनगुनिया, डेंगू और मलेरिया जैसा ही था। निपाह वायरस में संक्रमित 50 प्रतिशत से ज्यादा लोगों की मौत हो गई थी जबकि कोरोना की मृत्युदर सिर्फ तीन फीसदी के करीब है।

Mahesh Kumar Dodeja

SHISHU RANJAN

Outside Delhigate, Udaipur - 313 001 (Raj.)
Tel. : 0294 - 2529504 (S), 0294 - 2413461 (R), Mob.: 9829887900

कोरोना से संघर्ष
गहलोत ने छोड़ी कुशल प्रबंधन की छाप

✍ डॉ. सत्यनारायण सिंह

राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने समय रहते अपनी वैज्ञानिक एवं प्रबन्धकीय सोच से कोरोना की भयावहता को समझा और भारत में सबसे पहले राजस्थान में 31 मार्च तक के लिए लॉकडाउन की घोषणा की। राजस्थान की इस पहल को देखते हुए ही देश के अन्य राज्य भी लॉकडाउन कर कोरोना को तीसरे स्टेज पर पहुंचने से रोकने के लिए एकजुट हुए। स्टेट वार रूम स्थापित किया, सूचना व प्रौद्योगिक विभाग का अभिनव प्रयोग किया। 200 टेलीफोन लाईन का राज्यस्तरीय कोरोना वार रूम व जिला स्तरीय वार रूम गठित है।

कोरोना वायरस की गम्भीरता को देखते हुए मुख्यमंत्री लगातार प्रतिदिन जिला कलेक्टर व अधिकारियों से फीडबैक लेने के साथ आवश्यक दिशा-निर्देश देते रहे हैं। वहीं स्वयं देर रात तक प्रतिदिन उच्च स्तरीय बैठक कर प्रशासन को सक्रिय व व्यवस्थाओं को चाकचौबंद करने में जुटे रहे। उच्च स्तर के अधिकारियों के कोर ग्रुप की दैनिक समीक्षा, लगातार वीडियो कांफ्रेंसिंग, सांसदों व विधायकों के साथ हर दूसरे दिन वीडियो कांफ्रेंसिंग, दुनिया के 50 देशों में बसे प्रवासी राजस्थानियों व देश के विभिन्न शहरों में कार्यरत लोगों से वीडियो कांफ्रेंसिंग, निजी व सेवानिवृत्त चिकित्सकों, धर्म गुरुओं, एनजीओ के साथ बैठक की। जिला कलक्टर व अन्य अधिकारियों के साथ 65 वीडियो कांफ्रेंसिंग की। राजनीति से ऊपर उठकर केन्द्र व राज्य में सार्थक समन्वय बनाया। जनता को सचेत किया कि लॉकडाउन को ही कर्फ्यू मानकर चले नहीं तो सरकार को इससे अधिक कड़े कदम उठाने को बाध्य होना पड़ेगा।

मुख्यमंत्री ने प्रशासन, पुलिस व चिकित्सा विभाग और नगर निगम के बीच बेहतरीन तालमेल बनाया व उसकी मॉनिटरिंग लगातार करते हुए निर्देश दिए। फिल्ड में उनकी पालना सुनिश्चित की उसका परिणाम था कि भीलवाड़ा व कई अन्य जिलों के प्रयास रोलमाडल के रूप में सामने आये। मुख्यमंत्रियों की बैठक में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मुख्यमंत्री की प्रबंधकीय क्षमता, कार्य प्रणाली व प्रयत्नों की सराहना की। केन्द्र सरकार द्वारा भेजी गई मेडिकल टीमों ने भी राज्य सरकार के प्रयासों की भूरी-भूरी प्रशंसा की। कोरोना से संघर्ष के दौर में राज्य के स्वास्थ्य विभाग, गृह विभाग, आपदा प्रबंधन विभाग, स्थानीय प्रशासन, स्वयंसेवी संस्थान में समन्वय का अनूठा उदाहरण देखने को मिला। प्रबन्धकीय दृष्टि पूरी तरह कारगर सिद्ध हुई। जिससे कोरोना वायरस के फैलाव को रोकने में राज्य सरकार काफी हद तक सफल हुई। पुलिस कर्मचारियों, लैब टेक्नीशियन्स को विशेष प्रोत्साहन की घोषणा की गई। समाज सेवी व्यक्तियों व संस्थाओं ने उनकी अपील पर राहत

के कामों में मदद की। जिससे आगे आकर कोरोना के विरूद्ध जंग में बड़ी मदद मिली।

गांवों में प्रदेश में कोरोना वायरस जांच व उपचार के लिए समुचित प्रबन्ध किया गया। प्रदेश सरकार ने संक्रमित होकर कार्मिक की मृत्यु होने पर 50 लाख की मुआवजा राशि परिवार को देने की घोषणा की। आवश्यकतानुसार क्वारंटाइन सेंटर्स तैयार किए गए। टेस्टिंग किट, वेंटिलेटर व अन्य उपकरणों की खरीद की गई। टेस्टिंग कैपिसिटी प्रतिदिन 16500 टैस्ट करने की बढ़ाई गई है। 550 मेडिकल ओपीडी वैन का संचालन किया गया, 100000 बैड व 3000 वालंटियर्स की व्यवस्था की गई। राजस्थान देश में बेहतर व्यवस्थाओं के मामले में दूसरे नंबर पर है। लॉकडाउन में धन्धे बंद होने के कारण एक भी व्यक्ति को भूखा नहीं सोने देने का संकल्प लेते हुए आवश्यक व्यवस्था की गई। दिहाड़ी मजदूर व श्रमिकों के लिए 3200 रुपये का राहत पैकेज लागू किया गया। प्रवासी मजदूरों व उनके परिवार जनों के लिए भोजन की व्यवस्था की गई। बेघर लोगों, दिहाड़ी मजदूरों, ठेले, थड़ी वालों का सभी जिलों में विशेष सर्वे कराकर सहायता का क्रम आज भी जारी है। राज्य सरकार ने फैक्ट्रियों में काम करने वाले मजदूरों को लगातार वेतन देने का फैक्ट्री मालिकों को निर्देश दिया। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा कार्यक्रम के तहत सरकार ने बाहर से आने वाले लोगों के लिए 2100 रुपये प्रति क्विंटल गेंहू खरीदकर निःशुल्क वितरण किया। खाद्य सुरक्षा कार्यक्रम के तहत 1 करोड़ 10 लाख परिवारों को दो माह के लिए दस-दस किलो गेंहू निःशुल्क दिया गया। गैर कोविड मरीज को उपचार के अभाव का सामना नहीं करना पड़े इसके लिए पोर्टल के जरिए रजिस्ट्रेशन कराया गया। आज भी मुख्यमंत्री इस दिशा में सतत सक्रिय हैं।

मानवता को बचाने की लड़ाई में सब शामिल हों

'महामारी से पूरा विश्व चिन्तित है। सरकार लोगों की जान बचाने के लिए हर बड़े फैसले ले रही है। अब जरूरत है कि मानवता को बचाने की इस लड़ाई में हर व्यक्ति शामिल हो। आज जरूरत है प्रदेश का हर व्यक्ति अपने नागरिक धर्म का पालन करके सरकार का सहयोग करे। इस निर्णायक लड़ाई में जहां भी सरकार की ज़रूरत होगी, वहां वह पूर्ववत् नागरिकों के साथ खड़ी मिलेगी।'

- **अशोक गहलोत**, मुख्यमंत्री, राजस्थान

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

डॉ. महावीर सिंह परिहार
एम.एस. (आर्थो)
अस्थि रोग विशेषज्ञ
मो. 94141 62139

S H R C

डॉ. श्रीमती सुमन परिहार
एम.एस. (सर्जरी)
महिला शल्य चिकित्सक
मो. 98297 91760

श्रीनाथ हॉस्पीटल एण्ड रिसर्च सेन्टर

उपलब्ध सुविधायें

- आर्म (टेलिविजन) द्वारा आधुनिकतम तरीके से हड्डी के फ्रेक्चर की ऑपरेशन सुविधा।
- स्तन सम्बन्धी रोगों (गाठ, केंसर) का इलाज व निदान।
- एपेन्डिक्स, हर्निया एवं पथरी, बच्चेदानी का ऑपरेशन।
- हड्डी के सभी प्रकार के आधुनिक ऑपरेशन।
- नेलिंग-प्लेटिंग, प्रोस्थेसिस इत्यादि।
- जन्मजात विकलांगता एवं पोलियो के ऑपरेशन।
- प्लास्टर
- एक्स-रे

ऑपरेशन एवं भर्ती की सुविधा उपलब्ध

3-नवरत्न कॉम्पलेक्स, महावीर कॉलोनी पार्क,
80 फीट रोड, एवरेस्ट आशियाना के सामने, उदयपुर

गौरी घाटी में 'स्नो लेपर्ड' की चहल कदमी

अन्तर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ ने इन्हें डाला लुप्त प्रायः प्रजातियों की सूची में, शुरू हुई बचाने की मुहिम

जनवरी 2020 में उत्तराखण्ड के पिथौरागढ़ की गौरी घाटी में दिखे थे चार दुर्लभ हिम तेंदुए। इससे पहले 2015 में कुमाऊं के बागेश्वर वन खण्ड में कैमरों की जद में आया था, एक हिम तेंदुआ।

नंद किशोर

उत्तराखण्ड के पिथौरागढ़ की गोरी घाटी में हिम तेंदुए(स्नो लेपर्ड) घूम रहे हैं। यह खुलासा वर्ल्ड वाइल्ड लाइफ फंड(डब्ल्यूडब्ल्यूएफ) की ओर से स्नो लेपर्ड कंजरवेशन प्रोजेक्ट के तहत लगाए गए चार कैमरों से मिली तस्वीरों से हुआ। डब्ल्यूडब्ल्यूएफ ने ट्विटर हेंडल पर 23 जनवरी को चार फोटो शेयर की थीं, जिनमें एक फोटो में तीन हिम तेंदुए नज़र आ रहे थे।

प्रोजेक्ट हेड और वैज्ञानिक ऋषि शर्मा के अनुसार हिम तेंदुए 3500 मीटर से अधिक ऊंचाई वाले इलाके के कैमरों में कैद हुए। कुमाऊं में इससे पहले बागेश्वर वन खण्ड में ग्लेशियर रेंज के सुंदरढंगा में हिम तेंदुए की फोटो वन विभाग के कैमरों में कैद हुई थी। सन् 2013 में ग्लेशियर जैसी जगहों पर वन्य जीवों की स्थिति जानने के लिए तत्कालीन सीसीएफ कुमाऊं परमजीत सिंह के निर्देश पर बेस लाइन सर्वे किया गया था। 29 जून, 2015 की रात ढाई बजे हिम तेंदुआ कैमरे की जद में आया था।

हिम तेंदुए काफी हद तक एकाकी जीवन बिताते हैं। अंतरराष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ ने इन्हें लुप्तप्राय प्रजातियों वाली सूची में रखा है।

रंगरूप-कद काठी

हिम तेंदुए लगभग 1.4 मीटर लम्बे होते हैं। धारियों वाली इनकी पूंछ 90-100 सेमी तक होती है। इनका वजन 75 किलोग्राम के आसपास होता है। ये लगभग 15 मीटर की ऊंचाई तक उछल सकते हैं। इनकी खाल पर सलेटी और सफेद फर होता है और गहरे लाल रंग के धब्बे होते हैं। फर बहुत लम्बा और मोटा होता है, जो इन्हें ऊंचे ठण्डे स्थानों पर भीषण सर्दी से बचाकर रखता है।

खाल मोटी और कान छोटे होते हैं। इनकी आंखें हरी या ग्रे रंग की होती है, जो बड़ी बिल्लियों में असामान्य है। आमतौर पर बड़ी बिल्लियों की आंखें पीली या सुनहरे रंग की होती हैं।

पैरों पर भी बड़े-बड़े फर होते हैं ताकि बर्फ पर ये सहज रूप से चल सकें। प्रायः ये रात्रि में सक्रिय होते हैं। लगभग 90-100 दिनों के गर्भाधान के बाद मादा चट्टानी गुफाओं में 2-3 शावकों को जन्म देती है। तीन माह की आयु होते ही ये मां के साथ विचरण करने लगते हैं। हिम तेंदुए बिल्ली परिवार की ऐसी एकमात्र प्रजाति है, जो दहाड़ तो नहीं सकती लेकिन बिल्ली की तरह तेज़ आवाज में घुरघुरा सकती है। ये भेड़-बकरियों और क्षेत्र में पाए जाने वाले ऐसे ही जानवरों का शिकार करते हैं। हालांकि ये शक्तिशाली शिकारी अपने से तीन गुना अधिक वजन वाले पशुओं को भी दबोच कर उनका जीवन समाप्त कर सकते हैं। ये अपने से कई गुना छोटे जैसे मारमोट खरहे और गेम बर्ड्स को भी अपना निवाला बनाते हैं।

मौजूदा उपस्थिति : लुप्त प्रायः होती इस संकटग्रस्त प्रजाति को भारत, अफगानिस्तान, भूटान, चीन, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, नेपाल, पाकिस्तान, रूस, ताजिकिस्तान, उज्बेकिस्तान आदि देशों की हिम आच्छादित घाटियों और पहाड़ों में कभी-कभार ही कहीं-कहीं विचरते देखा गया है।

चट्टानी इलाके पसंद

काफी शर्मीले स्वभाव का यह जीव उबड़-खाबड़ चट्टानी इलाकों में रहना पसंद करता है। भारत में ये करीब 75 हजार वर्ग किलोमीटर के दायरे में रहते हैं। उच्च-ट्रांस-हिमालयी क्षेत्र वाले राज्यों जम्मू-कश्मीर, हिमाचल, उत्तराखंड, सिक्किम तथा अरुणाचल में पाया जाता है। हेमिस राष्ट्रीय उद्यान, नन्दा देवी राष्ट्रीय उद्यान, फूलों की घाटी, पिन घाटी राष्ट्रीय उद्यान, ग्रेट हिमालयन राष्ट्रीय उद्यान आदि संरक्षित क्षेत्र।

गर्मियों में आम तौर पर पर्वतों के वन क्षेत्र एवं चट्टानी इलाकों में 2,700 से 6,000 मीटर की ऊंचाई पर रहता है। सर्दियों में यह भोजन की तलाश में 1,200 से 2,000 मीटर की ऊंचाई पर स्थित जंगलों तक आ जाता है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि भारत में उत्तराखण्ड के कुछ क्षेत्र तथा जम्मू-कश्मीर व लद्दाख का 12 प्र.श. क्षेत्र हिम तेंदुओं के रहने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है।

बहुत कम हैं हिम तेंदुए

इस नष्ट होती प्रजाति को बचाने के प्रयास हो रहे हैं। वर्तमान में दुनिया में 4500 से लेकर 7400 तक इनकी संख्या बताई जा रही है। भारत में इनकी आबादी का आकलन 500-700 के बीच किया गया है।

संरक्षण

हाल ही में हुए एक अध्ययन में हिम तेंदुओं के संरक्षण की एक बेहतर रणनीति तैयार करने के लिए स्थानीय समुदायों की विशेष सहभागिता और उनकी आजीविका की सुनिश्चितता पर जोर देने की बात सामने आई है।

हिम तेंदुए अल्पाइन पारिस्थितिकी तंत्र में पाए जाने वाले प्रमुख शिकारी जानवर होते हैं। इनका संरक्षण अनेक जंगली जानवरों जैसे एशियाई जंगली बकरी, तिब्बती जंगली भेड़, लद्दाख की दाढ़ी वाली लाल उरियल भेड़, चिरु मृग, तिब्बती बकरी ताकिन, मृग जैसी बकरी सीरो और कस्तूरी मृग को बचाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। हालांकि, इन जंगली जानवरों की घटती आबादी और विशेष तौर पर हिम तेंदुओं की खाल के लिए किए जाने वाले अवैध शिकार के कारण इनकी संख्या कम होती जा रही है। कहीं-कहीं गांवों में जब हिम तेंदुए स्थानीय पालतू जानवरों को अपना शिकार बना लेते हैं, तब बदले की भावना के चलते भी गांव के लोग इनको मार डालते हैं। इनके संरक्षण का कार्यक्रम तभी सफल हो सकता है, जब इसके लिए स्थानीय समुदायों को भी शामिल करके उनको इस प्रजाति के संरक्षण की महत्ता का अहसास कराया जाए।

भारत के विशेष प्रयास

केन्द्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने हिम तेंदुओं की रक्षा और संरक्षण को बढ़ावा देने की दिशा में पिछले वर्ष अक्टूबर में देश में हिम तेंदुओं की संख्या का आकलन करने के लिए प्रथम राष्ट्रीय प्रोटोकॉल का शुभारम्भ किया था। यह कार्यक्रम लद्दाख, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश के सहयोग से क्रियान्वित होगा। जावड़ेकर के अनुसार आगामी दशक में दुनिया में हिम तेंदुओं की आबादी दुगुना करने के प्रयास होंगे। वैश्विक हिम तेंदुआ एवं पारिस्थितिकी संरक्षण(जीएसएलईपी) कार्यक्रम की संचालन समिति की चौथी बैठक में यह भी बताया गया कि सामान्य बाघ की 77 प्र.श. आबादी भारत में निवास करती है, यह भारत के इस दिशा में प्रयासों की सफलता का परिणाम है। इस समय 2967 बाघ हैं। इनकी सटीक गणना के लिए 26000 कैमरों का इस्तेमाल हुआ। भारत में 500 से अधिक शेर, 30,000 से अधिक हाथी और 2500 से अधिक एक सींग वाले गैंडे भी हैं। 23-24 अक्टूबर 2019 को नई दिल्ली में जीएसएलईपी कार्यक्रम की दो दिवसीय बैठक में नेपाल, रूस, किर्गिस्तान और मंगोलिया के मंत्रियों के साथ-साथ हिम तेंदुओं की आबादी वाले नौ देशों के वरिष्ठ अधिकारियों ने भी भाग लिया था।

Wtih Best Compliments from

M/s. Patel Trading Company

Filter Media Suppliers, Civil Contractor
& Water Supply Consultants

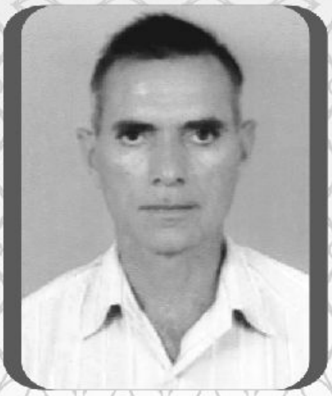

Village : Bhalo Ka Guda (Chota), Post-Bhalo Ka Guda, Teh. Girwa, Distt. Udaipur 313024
Call : 9829284107, 9928393281, 9929400642, E-mail : pateldrd107@gmail.com

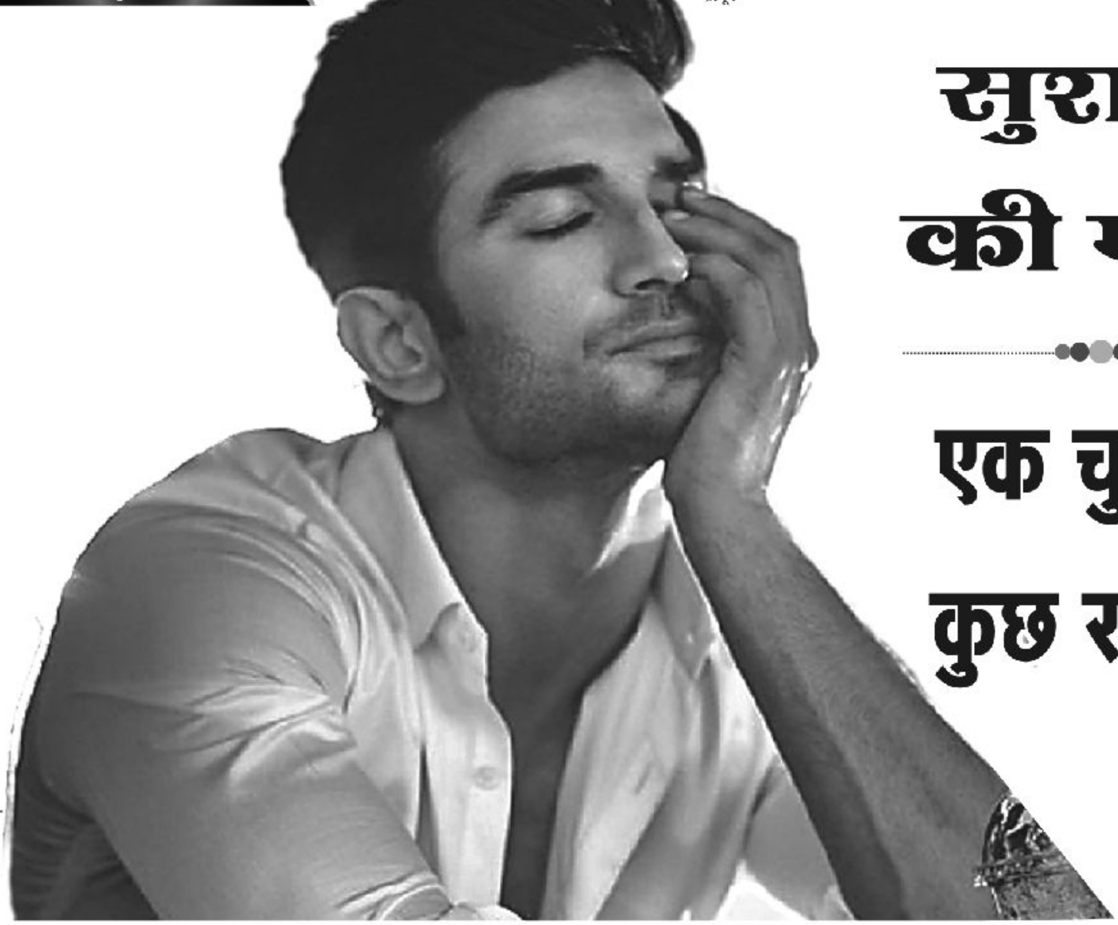

सुशांत की मौत

एक चुनौती कुछ सवाल

✍ अमित शर्मा

छोटे शहर से निकलकर बहुत ही कम समय में अपनी मेहनत से अभिनय की दुनिया में बड़ा मुकाम हासिल करने वाले अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत ने 14 जून को अपने बान्द्रा(मुम्बई) स्थित फ्लेट में फन्दे से लटककर 34 साल की छोटी सी ज़िंदगी को विराम दे दिया। फिल्म 'छिछोरे' में युवाओं को आत्महत्या न करने की सीख देने वाले इस कलाकार की खुदकुशी की खबर आई तो फिल्म इण्डस्ट्री और फैन्स स्तब्ध रह गए। हर शख्स के दिमाग में बस एक ही सवाल था कि आखिर ऐसी क्या वजह रही कि इस उभरते और प्रतिभाशाली कलाकार ने आत्महत्या का कड़वा फैसला लिया। कई लोगों का मानना है कि उन्हें इण्डस्ट्री से पूरा सपोर्ट नहीं मिल रहा था। कुछ टीवी सीरियल और फिल्मों में उनके बेहतरीन अभिनय से चिढ़ा हुआ इण्डस्ट्री का एक गुट 'आउटसाइडर' कहकर मीडिया के अपने पालतू लोगों के माध्यम से उनके खिलाफ अफवाहों का बाज़ार गर्म किए हुए था। कुछ तथाकथित बड़े निर्माता-निर्देशकों के कैम्पों से निकली हवाएं उन्हें 'बैन' करने का भी संकेत दे रही थीं।

आम तौर पर 'नेपोटिज्म' के खिलाफ आवाज़ उठाने वाली एक्ट्रेस कंगना रनौत ने सुशांत की खुदकुशी को लेकर बॉलीवुड इण्डस्ट्री की जमकर क्लास लगाई है और 'आउटसाइडर्स' को ठीक तरह से एकनॉलेज नहीं किए जाने की बात कही है। उन्होंने सुशांत को कमजोर दिमाग वाला कहने वालों को सटीक जवाब दिया कि 'जो बंदा इंजीनियरिंग में रैंक होल्डर है, उसका दिमाग कमज़ोर कैसे हो सकता है।' सुशांत पूर्व में यह संकेत दे भी चुके थे कि इण्डस्ट्री में उनका कोई 'गॉडफादर' नहीं है, उन्हें यहां से निकाल दिया जाएगा। उसे 'वर्कलेस' तक कहा गया। कंगना कहती है कि 'ऐसे लोगों ने इण्डस्ट्री से मेरा पांव उखाड़ने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी थी।' सुप्रसिद्ध निर्माता-निर्देशक शेखर कपूर समेत कई अन्य स्टार्स भी ऐसे ट्वीट्स कर चुके हैं, जो इण्डस्ट्री के अन्दर की गड़बड़ी की ओर इशारा करते हैं। इस मामले में अभिनेत्री रवीना टण्डन का कहना है कि 'सुशांत की मौत कई सवाल खड़े कर रही है।' रवीना एक ट्वीट में लिखती है 'इण्डस्ट्री में जब आप सच बोलते हैं तो आपको झूठा, पागल और सायकॉटिक प्रचारित किया जाता है। चमचे पत्रकार कुछ लोगों के इशारे पर पेज भर-भरकर लिखते हैं और आपकी सारी मेहनत को बर्बाद कर देते हैं।' वे कहती हैं कि 'वे इण्डस्ट्री की आभारी हैं, जिसने उन्हें बहुत कुछ दिया लेकिन कुछ लोगों की गन्दी राजनीति ने मन को खट्टा भी कर दिया। कुछ ऐंकर्स इनसाइडर/आउटसाइडर को लेकर प्राय: चिल्लाते रहते हैं।' इन तमाम शंकाओं-आशंकाओं के बीच महाराष्ट्र के गृहमंत्री अनिल देशमुख का एक बड़ा बयान आया है, उन्होंने अपने ट्विटर हैंडल पर एक वीडियो शेयर किया है। जिसमें कहा कि 'सुशांत की पोस्टमार्टम रिपोर्ट कहती है कि उन्होंने आत्महत्या की। लेकिन यह बातें

भी सामने आ रही हैं कि फिल्म इण्डस्ट्री में 'बिजनस राइवलरी' के कारण सुशांत ने आत्महत्या की है, अतएव इस एंगल से भी पुलिस जांच होगी। उनकी खुदकुशी का कारण 'प्यार' का रूठ जाना भी माना जा रहा है।

मूलतः पूर्णिया(बिहार) के मलडीहा गांव निवासी किसान और सरकारी अफसर के. के. सिंह के इकलौते बेटे गुलशन उर्फ सुशांत सिंह अदाकारी का सपना लिए पटना से दिल्ली होते हुए मायानगरी पहुंचे थे। धारावाहिक 'पवित्र रिश्ता' से पहचान बनाकर 2013 में फिल्म 'काई पो छे!' में अभिनय का जलवा बिखेरा और देखते ही देखते लोगों के दिलों पर राज करने लगे। सुशांत छोटे शहर के ऐसे लोगों के लिए सपने की तरह थे, जिन्होंने फिल्म इण्डस्ट्री में कुछ करने का हौसला पाला था।

पटना में पले-बढ़े, चार बहनों के लाडले सुशांत पढ़ने में तेज थे। फिजिक्स उनका प्रिय विषय था। तय था कि उन्हें इंजीनियर बनना है, लेकिन जिंदगी उन्हें किसी और दिशा में ले जाएगी, उन्होंने सोचा नहीं था। मां की असामयिक मृत्यु और परिवार का दिल्ली जाकर बसना लगभग एक साथ हुआ। बारहवीं के बाद सुशांत को दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग में दाखिला मिल गया। यही वक्त था, जब वह कॉलेज में थिएटर व अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेने लगे। डांस और थियेटर में मन ऐसा रमा कि सुशांत ने तय किया कि वह इंजीनियर बनने की बजाय एक फुलटाइम कलाकार बनना चाहेंगे। सुशांत अपना कोर्स पूरा किए बिना सपनों की नगरी मुंबई के लिए रवाना हो गए। बहुत कम लोग जानते होंगे कि वे भारत सरकार की ओर से वुमन एंटरप्रेन्योरशिप प्लेटफॉर्म के ब्रांड एम्बेसेडर थे। उन्होंने बच्चों की मदद के लिए भी एक 'सुशांत फॉर एजुकेशन' प्रकल्प बनाया था। सुशांत एस्ट्रोनॉमी के बारे में भी काफी जानकारी रखते थे और निरन्तर अध्ययन करते थे।

पुरस्कार

2014	फिल्म 'काई पो छे' के लिए स्क्रीन अवॉर्ड बेस्ट मेल डेब्यू अभिनेता, गिल्ड अवार्ड बेस्ट डेब्यू अभिनेता
2010	धारावाहिक 'पवित्र रिश्ता' के लिए बिग स्टार एंटरटेनमेंट अवॉर्ड, इंडियन टेलीविजन एकेडमी अवॉर्ड्स
2016	फिल्म एम. एस. धोनी द अनटोल्ड स्टोरी के लिए स्क्रीन अवॉर्ड बेस्ट अभिनेता(क्रिटिक्स)

सुशांत ने 2018 में चांद पर जमीन खरीदी थी। उनका ये प्लॉट 'सी ऑफ मसकोवी' में है। उन्होंने यह जमीन इंटरनेशनल लूनर लैंड्स रजिस्ट्री से खरीदी थी। हालांकि, अंतरराष्ट्रीय संधि मुताबिक कानूनी तौर पर मालिकाना हक नहीं माना जा सकता, क्योंकि पृथ्वी से बाहर की धरोहर है और इस पर किसी का कब्जा नहीं हो सकता।

उनमें कुछ ऐसी बातें थीं, जो उन्हें खास बनाती थीं। एक अभिनेता के रूप में वह संघर्ष करके उभरे। दिल्ली में थियेटर से लेकर मुम्बई में 'पवित्र रिश्ता' धारावाहिक में चमकने तक। सिनेमा में 'काई पो छे' से 'छिछोरे' तक उनके बमुश्किल 12-13 साल के करियर में वे और उनका काम कभी हल्का या कमजोर दिखाई नहीं दिया। चुन-चुनकर अच्छी फिल्में करते थे। फिल्में भी लीक से हटकर अलग-अलग पृष्ठभूमि की होती थीं। शुद्ध देशी रोमांस से क्रिकेट के खिलाड़ी तक और जासूस से डकैत तक की भूमिका को उन्होंने सिल्वर स्क्रीन पर जीवन्त कर दिखाया। वह केवल अभिनेता ही नहीं एक पेशेवर डान्सर भी थे। उन्होंने श्यामक डावर जैसे नृत्य-महारथी से प्रशिक्षण लिया था। कुशल निर्देशक भी अभिनेता के रूप में इण्डस्ट्री में उनका महत्व रेखांकित कर रहे थे। वे भाव प्रणव सात्विक अभिनय की सीढ़ियां तेजी से चढ़ रहे थे। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान और महान क्रिकेटर महेन्द्र सिंह धोनी की भूमिका को उन्होंने बायोपिक में इतनी संजीदगी से अंजाम दिया कि उन्हें चाणक्य, टैगोर और कलाम जैसी महान हस्तियों के रूप में पर्दे पर उतारने की तैयारियां तक होने लगी थी। इस बीच उनके आत्महत्या की दुखद खबर आ गई। इस कलाकार को बहुत आगे और ऊंचाई पर जाना था परन्तु दुर्भाग्य से यात्रा बीच राह में ही थम गई। बेशक यह मौत एक चुनौती और कुछ सवाल छोड़ गई है।

दिल्ली से इंजीनियरिंग की पढ़ाई

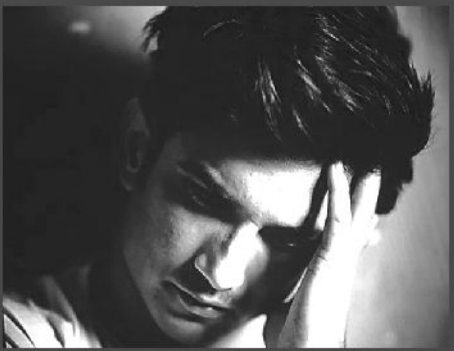

- सुशांत का जन्म 21 जनवरी, 1986 को बिहार के पूर्णिया जिले के मलडीहा में हुआ था।
- बिहार की राजधानी पटना में सेंट करण हाईस्कूल से शुरुआती पढ़ाई की।
- 2003 में दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग के एंट्रेंस एग्जाम में सातवीं रैंक हासिल की थी।
- मैकेनिकल इंजीनियरिंग में दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग में दाखिला लिया।
- 11 इंजीनियरिंग एंट्रेंस एग्जाम पास किए थे, जिसमें इंडियन स्कूल ऑफ माइंस का एंट्रेंस एग्जाम भी शामिल

बैंक ग्राउंड डांसर से की शुरुआत

- सुशांत ने टीवी से अपने करियर की शुरुआत से पहले बैकग्राउंड डांसर बनकर काम किया था।
- वर्ष 2008 में स्टार प्लास के शो 'किस देश में है मेरा दिल' से छोटे पर्दे पर अभिनय की शुरुआत की
- 2009 से 2011 के बीच आए टीवी शो 'पवित्र रिश्ता' के जरिये वह घर-घर लोकप्रिय हुए
- साल 2010 में वह रियलिटी टीवी शो 'जरा नच के दिखा' और रियलिटी टीवी शो झलक दिखला जा में नजर आए थे।

2013 के बाद पीछे मुड़कर नहीं देखा

- सुशांत को 2013 में पहली फिल्म 'काई पो छे' मिली। यहां से उनका करियर रफ्तार पकड़ने लगा।
- इसी साल यश राज बैनर के तले वह फिल्म शुद्ध देसी रोमांस में भी नजर आए थे। 2014 में आमिर खान स्टार फिल्म पीके में सुशांत के किरदार की तारीफ हुई।
- साल 2015 में फिल्म डिटेक्टिव व्योमकेश बख्शी की में उनका किरदार अविस्मरणीय है।

धोनी की बायोपिक से बॉलीवुड में धमक

- साल 2016 में रिलीज हुई बायोपिक फिल्म एम. एस. धोनी द अनटोल्ड स्टोरी से बॉलीवुड में बनाई खास जगह
- इसके बाद सुशांत ने राब्ता, वेलकम टू न्यूयॉर्क, केदारनाथ, सोनचिड़िया जैसी हिट फिल्में की।
- सुशांत की आखिरी फिल्म छिछोरे थी। जो 2019 में रिलीज सुपरहिट फिल्मों में शामिल थी।

पाठक पीठ

मार्च अंक में सुप्रसिद्ध लेखिका ममता कालिया का आलेख बहुत अच्छा लगा। निश्चित रूप से महिलाएं एक समृद्ध परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व की धुरी हैं। अवसर मिलने पर उन्होंने इसे साबित भी किया है।

- प्रियंका जोधावत, निदेशक, एसआईईआरटी

'प्रत्यूष' के फरवरी अंक में बढ़ते प्रदूषण से प्रवासी पक्षियों की भारत यात्रा में निरन्तर होती कमी तथा मार्च अंक में 'संकट में जंगल का राजा' आलेख वन्य प्राणियों के अस्तित्व पर संकट की ओर स्पष्ट रूप से इंगित करते हैं। इस मामले में संयुक्त राष्ट्र एवं देशों की सरकारों को चिंतन कर पशु-पक्षियों की लुप्त होती प्रजातियों को बचाने के लिए सकारात्मक कदम उठाने चाहिए।

- धीरज जेठा, उद्यमी

'प्रत्यूष' निश्चय ही परिवार की पत्रिका है। इसमें, योग, धर्म, दर्शन, राजनीति, स्वास्थ्य, ज्योतिष पर्व-त्योहार सभी पक्षों पर कुछ न कुछ बेहतर सामग्री पढ़ने को मिल ही जाती है। मैं नियमित रूप से इसका पाठक हूँ। 'प्रत्यूष' 18 साल की हो गई, शुभकामनाएं।

- ग्लोरी फिलिप, प्रिंसिपल, सेंट मेथ्यूज स्कूल

सुप्रीम कोर्ट ने एक जनहित याचिका की सुनवाई करते हुए पिछले दिनों अपराधिक रिकार्ड वाले लोगों को चुनाव से दूर रखने के लिए जो निर्देश दिए हैं, वे समय की मांग हैं। राजनीति के क्षुद्र स्वार्थों ने भारतीय चिन्तन, मनन और संस्कारों को प्रदूषित ही किया है। धन और बाहुबल पर टिकी राजनीति कतई श्रेयस्कर नहीं हो सकती, इसके दुष्परिणाम भी सामने हैं। राजनीति में शुचिता को लेकर मार्च के अंक का 'सम्पादकीय' मन को छूने वाला रहा।

- जसबीर सिंह, उद्यमी

समाचार पत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से सम्बन्धित विवरण

घोषणा पत्र फार्म-4

1. प्रकाशन स्थल	उदयपुर
2. प्रकाशन अवधि	मासिक
3. मुद्रक का नाम	आशीष बापना
क्या भारत का नागरिक है	हां
पता	पायोराईट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. पावर हाउस के पास एमआईए एक्सटेंशन, रिको, उदयपुर
4. प्रकाशक का नाम	पंकज शर्मा
क्या भारत का नागरिक है	हाँ
पता	रक्षाबंधन, धानमण्डी, उदयपुर
5. सम्पादक का नाम	विष्णु शर्मा हितैषी
क्या भारत का नागरिक है	हाँ
पता	हितैषी भवन, सूरजपोल अन्दर, उदयपुर
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते, जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार हों	पंकज शर्मा रक्षाबंधन, धानमण्डी, उदयपुर

मैं पंकज शर्मा एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 23 जून, 2020 — **पंकज शर्मा**

स्थान : उदयपुर — **प्रकाशक**

वर्षा ऋतु की बीमारियाँ लक्षण और उपचार

✍ डॉ. विजय प्रकाश गौतम

काल को दो भागों आदानकाल और विसर्गकाल में विभक्त किया गया है। आदानकाल में सूर्य उत्तरायण होता है। आदान काल की ऋतुएं शिशिर, बसन्त एवं ग्रीष्म होती हैं। विसर्गकाल में सूर्य दक्षिणायन होता है। जिसकी ऋतुएं वर्षा, शरद और हेमन्त होती हैं। प्रत्येक ऋतु को 2-2 माह के अन्तराल में विभक्त किया गया है।

माघ से फाल्गुन	शिशिर ऋतु
चैत्र से वैशाख	बसन्त ऋतु
ज्येष्ठ से आषाढ़	ग्रीष्म ऋतु
श्रावण से भाद्रपद	वर्षा ऋतु
आश्विन से कार्तिक	शरद ऋतु
मार्गशीर्ष से पोष	हेमन्त ऋतु

दक्षिणायन ऋतुओं अर्थात वर्षा, शरद, हेमन्त में चन्द्रमा बलशाली होते हैं मधुर रस, अम्लरस एवं लवण रस बलवान होते हैं। सर्व प्राणियों का बल भी उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है। उत्तरायण ऋतुओं अर्थात शिशिर, बसन्त तथा ग्रीष्म में सूर्य बलशाली होते हैं और कटु, तिक्त, कषाय रस बलवान होते हैं। उत्तरोत्तर सर्व प्राणियों का बल क्षीण होता है।

ग्रीष्म काल में तपी हुई भूमि पर वर्षा का जल पड़ने से जो वाष्प निकलती है, उसके कारण जल अम्ल-विपाकी हो जाता है। जिस ऋतु में आकाश मण्डल मेघों से व्याप्त है एवं बिजली की चमक के साथ बारिश होती है उसे वर्षा ऋतु कहते हैं।

ग्रीष्म ऋतु में बढ़ी हुई उष्णता वर्षा के आगमन से कम होने लगती है। धीरे-धीरे भूमि एवं वातावरण में आर्द्रता बढ़ने लगती है। वर्षा ऋतु में मनुष्य की पाचन शक्ति तथा शारीरिक बल अत्यन्त कम होता है। इसलिए इस ऋतु में ऐसे आहार का सेवन करना चाहिए जो पचन में हल्का हो, वर्षा ऋतु में पानी हमेशा उबालकर ठंडा करके प्रयोग में लाना चाहिए।

वर्षा ऋतु में आहार विहार

पुराना चावल, लाल चावल, गेहूं, पुराने जौ, कुलथी, मूंग, जीरा, हींग, परवर, ताजा धनिया, पुदीना, भिंडी, लहसुन, प्याज, सौंठ, कद्दू, सूरण, दूध, घी, सेंधा नमक, शहद, अनार, ताजा गरम भोजन करना चाहिए। स्वच्छ हल्के रंग के कपड़े एवं सूखी जगह पर रहना चाहिए।

अपथ्य आहार विहार

बाजरा, मकई, नया चावल, अरहर, मसूर, चना, हरे मटर, पालक, मेथी, फूल गोभी, आलू, ककड़ी, भैंस का दूध, पनीर, श्रीखण्ड, मिठाई, ठंडा पानी, मांस, मछली, तले पदार्थ, दिन में सोना, अत्यधिक व्यायाम, अत्यधिक शीतल बहती हवा में न रहे।

अग्निमांध्य/अजीर्ण

आदानकाल की उष्णता से शरीर का सोम्यांश शोषित होने से शरीर क्षीण होता है। वर्षा में होने वाले वात प्रकोप तथा आर्द्रता बढ़ने के कारण जठराग्नि मंद होती है। इससे भूख नहीं लगना, पेट में भारीपन, उदरशूल, उल्टी होना, चक्कर आना, सिरदर्द, बदन दर्द शरीर में भारीपन, सुस्ती होती है।

उपचार : उपवास एवं हल्का भोजन एवं उष्ण जल पीएं, औषधियों में अग्नितुण्डी वटी, शंखवटी, अविपत्तिकर, चूर्ण, लवण भास्कर चूर्ण, अग्निकुमार रस, शंखभस्म, आरोग्यवर्धनी वटी, कुमारी आसव।

अतिसार/दस्त

वर्षा ऋतु में वात प्रकोप तथा अग्निमांध्य से अतिसार होता है। प्रकोपित वायु पूरी शरीर से जलांश को बड़ी आंतों में लाकर मल से मिश्रित होकर अत्यधिक मात्रा में बाहर निकाल देता है। आंतों की पुरसरण गति बढ़कर अधिक मात्रा में मलवेग आते हैं।

रोग के लक्षण : अधिक मात्रा में द्रवमल प्रवृत्ति, मल प्रवृत्ति के वेग में अधिकता, मुंह में सूखापन, अधिक प्यास, पेट में दर्द, सीने में दर्द, थकान, पिण्डलियों में ऐंठन।

उपचार : दीपन-पाचन-ग्राही औषध यथा मुस्ता, चित्रक, सौंठ, कुटज का उपयोग करना चाहिए। संजीवनी, शंखवटी रसपर्पटी,पंचामृतपर्पटी, कुटज धनवटी का प्रयोग करें।

अम्लपित्त

वर्षा ऋतु में स्वभावत: शरीर में पित्त संचय होता है। ऐसे समय अम्ल-विदाही विरुद्ध आहार सेवन से पित्त का उष्ण एवं द्रण गुण बढ़कर विदग्ध हो जाता है। जिससे अम्ल पित्त की उत्पत्ति हो जाती है। इसमें जी मिचलाहट, कड़वे एवं खट्टी डकारें, छाती में जलन, गले में जलन, अरूचि, पेट फूलना, उदरशूल एवं सिरदर्द के लक्षण होते हैं।

उपचार : अम्ल पित्त निर्माण करने वाले आहार विहार का परित्याग, लंघन लघु एवं पाचन भोजन करें। कामदुधा रस, प्रवाल पंचामृत, कर्पद भस्म, प्रवाल भस्म, अविपत्तिकर चूर्ण, धात्रि लौह प्रमुख औषध है।

निरोग रहने का आसान तरीका

हरीतकी चूर्ण(बड़ी हरड़) पूरे वर्ष भर निम्न प्रकार से सेवन करने से व्यक्ति को किसी भी प्रकार की बीमारी होने का खतरा टल जाता है।जैसे बच्चा मां के पास रहकर पोषित व सुरक्षित रहता है।वैसे ही हरीतकी के साथ स्वस्थ व दीर्घायु रहता है।

हरीतकी चूर्ण सेवन विधि(औषध मात्रा-एक चम्मच) : मई-जून-गुड़ के साथ, जुलाई-अगस्त-सैंधा नमक के साथ, सितम्बर-अक्टूबर-देशी खाण्ड के साथ, नवम्बर-दिसम्बर-सौंठ का चूर्ण मिलाकर, जनवरी-फरवरी-छोटी पीपल के चूर्ण के साथ, मार्च-अप्रैल-शहद के साथ। उक्त दवा सुबह 4-5 बजे खाली पेट ताजा पानी से लें। इससे पूर्व या बाद में चाय नहीं पीवे। पूरे जीवन भर लिया जा सकता है। निकटतम आयुर्वेद चिकित्सक से परामर्श समय-समय पर लेवें।

ज्वर

इस ऋतु में अग्नि मंद रहती है। जिससे सर्वांग जलन होती है।इसमें स्वेदा अवरोध, शूल, ग्लानि, अग्निमांध्य, मुँह का कड़वापन, धड़कन बढ़ना आदि लक्षण होते हैं।

उपचार : लंघन, स्वेदन, पाचन, वत्सनाभ युक्त औषध, अग्निवर्धक, स्नेहन, धृतपान, आरोग्यवर्धनी, त्रिभुवन कीर्ति रस, लौंग, तुलसी, गोदन्ति का प्रयोग करते हैं।

आमवात

वर्षा में होने वाले वातप्रकोप एवं अग्नि मांध्य से आम उत्पन्न होकर आमवात रोग उत्पन्न होता है। इस रोग में अंग दर्द, प्यास का अधिक लगना, अन्न का पाचन नहीं होना, आलस्य, शरीर में भारीपन, ज्वर, हस्तपाद, गुल्फ त्रिक, जानू संधियों में शोथ एवं शूल होता है। स्पर्श करने पर तीव्र वेदना, वृश्चिक दंशवत वेदना, संचारी वेदना होती है।

उपचार : आम पचन लंधन, रूक्ष स्वेद, बालू का स्वेद, एरण्ड स्नेह, गिलोय, सौंठ, भल्लातक, कुचला, सिहनाद गुग्गुल, वातविध्वंसन रस, महारासनादि क्वाथ, अग्नितुडी वटी का प्रयोग करते हैं।

कास श्वास/जुकाम

प्रकुपित वायु के कारण अग्निमांध्य से आम की उत्पत्ति होती है। कफ से उत्पन्न अवरोध एवं वात से उत्पन्न संकोच के कारण श्वास रोग उत्पन्न होता है।साथ ही खाँसी-जुकाम भी होता है।

उपचार : तालिसादि चूर्ण, सितोपलादि चूर्ण, अभ्रक भस्म, प्रवाल भस्म, च्यवनप्राश, पीपल, त्रिभुवन कीर्ति रस, श्वांसकुठार, द्राक्षासव का प्रयोग करना चाहिए।

त्वचाविकार

वर्षा ऋतु में वात प्रकोप के साथ कफ की भी वृद्धि होती है। जिससे त्वचा, रक्त, मांस, शरीरस्थ जलीय धातुओं में शैथिल्य होकर क्लैद की उत्पत्ति होती है। त्वचा में वैवर्ण्य विस्फोट, खुजली, दाह, दाद, शोथ, स्राव रूक्षता एवं पसीने की अधिकता बाधिर्य लक्षण होते हैं। इसमें आरोग्यवर्धनी, गंधक रसायन, वंगभस्म, पंचतक्ति धृत, महामंजिष्ठादि क्वॉथ, अमृता गुग्गुलु, रसमाणिक्य का प्रयोग करें।

ऐसे हों परदे गरमी का असर हो कम

गर्मी के मौसम में हर कोई घर को ठंडा रखना चाहेगा। ऐसे में परदे आपके साथी हो सकते हैं जो गर्मी से बचाव के साथ कमरे की खूबसूरती भी निखारते हैं। लेकिन खिड़की-दरवाजों पर इन्हें लगाते समय सिर्फ आकर्षक पैटर्न ही न देखें। अगर परदे सही न हों तो वे गर्म मौसम में घर का तापमान भी बढ़ा सकते हैं।

✍ रेणु शर्मा

गर्मी के मौसम में घर को भीतर से ठंडा रख पाना किसी चुनौती से कम नहीं है। घर में लगे पंखे, कूलर और एयर कंडीशनर जैसे उपकरण घर या कमरे का तापमान कम तो करते हैं, लेकिन इससे होने वाली बिजली की खपत बजट गड़बड़ा देती है। ऐसे में घर की खिड़की-दरवाजों पर परदों का चुनाव आपकी कुछ मदद कर सकता है। खिड़की-दरवाजों पर लगे परदे न सिर्फ इंटीरियर लुक में निखार लाते हैं, बल्कि कमरों को गर्म होने से भी बचाते हैं। बाजार में कई डिजाइन और पैटर्न वाले परदे उपलब्ध हैं, जो घर को भी खास लुक दे सकते हैं। इनमें डिजाइन, रंग और फैब्रिक का चुनाव करते समय मौसम को भी ध्यान में रखें, इससे घर की खूबसूरती निखरेगी और तापमान में भी संतुलन बना रहेगा।

पलट दें किरणों को

अगर घर में एयरकंडीशनर नहीं है, तो खिड़की दरवाजों पर रिफ्लेक्टिव परदे लगाएं। जो सूरज की किरणों को वापस भेजने में काफी हद तक सक्षम होते हैं। इससे कमरे की गर्मी में कुछ कमी जरूर आएगी। अमूमन रिफ्लेक्टिव

परदे प्लास्टिक के होते हैं, जिनमें एक ओर चमकदार रिफ्लेक्टिव परत होती है। इस चमकदार हिस्से को कमरे के बाहर रखा जाता है, जिससे सूरज की रोशनी परावर्तित होने के कारण कम ताप अंदर आता है।

मोटे परदे रोकेंगे धूप की चमक

मोटे परदे धूप की चमक को रोकते हैं तो ब्लैकआउट परदे रोशनी रोकते हैं। मोटे फैब्रिक वाले परदे आमतौर पर ऑडिटोरियम या थियेटर में लगते हैं, ताकि बाहर की रोशनी कमरे में बिल्कुल न आ सके। लेकिन ये परदे सिनेमा स्क्रीन और ऑडिटोरियम के स्टेज के लिए ही बेहतर हैं। घरों के लिहाज से ये ठीक नहीं हैं। अगर घर टॉप फ्लोर पर और बड़ी खिड़कियां हैं, जिनसे घर में कुछ ज्यादा ही रोशनी होती है, तो कुछेक खिड़कियों पर इनका प्रयोग कर सकते हैं। घर में रोशनी न आने की दृष्टि से ब्लैक आउट परदे बेहतर हैं। प्रकाश कम होगा, तो घर में गर्मी के अहसास में भी कमी आती है। दिन के समय के लिए सोने के कमरे में भी इन परदों का उपयोग किया जा सकता है।

लाइनिंग भी रोकती है गर्मी

गर्मी में लाइनिंग वाले पर्दे भी बेहतर विकल्प हैं। परदों में लाइनिंग लगाने से उनमें एक परत और जुड़ जाती है। इससे बाहर की चिलचिलाती धूप और गर्मी से बहुत हद तक बचाव होता है। गर्मी के अलावा लाइनिंग वाले परदे बाहर से आने वाले शोर को भी नियंत्रित करने में सहायक होते हैं।

रंग हो हल्का

गर्मियों में हल्के, रंग वाले कपड़े पहने जाते हैं, उसी तरह घर के परदों का रंग भी हल्का होना चाहिए। सफेद, क्रीम और पीच रंग सूरज की रोशनी को कम ग्रहण करते हैं, जबकि काला, हरा, कोरल, आइस एंड मिंट ब्लू, सी ग्रीन और नीला रंग गर्मी को सोख लेते हैं, जिनसे घर का तापमान बाहर की ही तरह गर्म हो जाता है। लेकिन गहरे रंग से सूरज की रोशनी का प्रभाव कमरे में कम हो जाता है, वहीं हल्के रंग कमरे का तापमान कम रखने में मददगार होते हैं और घर मे प्राकृतिक रोशनी को भी आने देते हैं।

कपड़ा ही बेहतर

भले ही परदों में इन दिनों शीट्स या प्लास्टिक का इस्तेमाल हो रहा है, लेकिन मौसम के लिहाज से ये अनुकूल नहीं हैं। अगर आप परदों से घर के तापमान को कम रखना चाहते हैं, तो कपड़े से बेहतर कुछ भी नहीं। कपड़ों में भी कॉटन फैब्रिक बेहतर है। गर्म हवाओं और धूप को कमरे से बाहर रखने के लिए यह फैब्रिक एकदम उपयुक्त है। इनसे तेज रोशनी भी छन कर आती है, जिससे कमरों में न तो अंधेरा होता है और न ही आंखों में चुभने वाला तेज उजाला। कॉटन के अलावा वेलवेट भी बढ़िया विकल्प है। यदि सिल्क के पर्दे लगा रहे हैं, तो इनमें लाइनिंग का प्रयोग जरूर करें अन्यथा, तेज धूप से सिल्क की गुणवत्ता प्रभावित होगी।

दो परतों में परदे

भरी दोपहरी में भले ही घर में सूरज की तेज धूप और लू के थपेड़ों को घर में न आने दें, लेकिन सुबह-शाम के दौरान चलने वाली ठंडी हवा को तो जरूर घर में आने देना चाहेंगे। ऐसे में मोटे-मोटे परदों को टांगने से बेहतर है कि लेयर्ड परदों का इस्तेमाल करें। जिनमें दो तरह के फैब्रिक का इस्तेमाल होता है। हल्के रंग की लाइनिंग के साथ मोटी परत के परदे जोड़ दिए जाते हैं। तेज धूप और गर्मी में आप दोनों को बंद कर सकते हैं, वहीं सुबह-शाम के वक्त मोटी लेयर को साइड में हटाकर हल्की परत को सजाएं, जिससे घर में ठंडी ओर ताजी हवा का प्रवाह बना रहता है।

कंक्रीट के जंगलों ने रोकी परिन्दों की परवाज़

स्टेट ऑफ इंडियाज़ बर्ड - 2020 में चौंकाने वाला खुलासा
पिछले पांच साल में लुप्त हुई पक्षियों की 146 प्रजातियां

✍ निष्ठा शर्मा

आसमान पर अपने खूबसूरत छोटे-बड़े पंख फैलाए उड़ान भरने वाली बहुरंगी परिन्दों की कई प्रजातियों पर विलुप्ति का खतरा मंडरा रहा है।

पिछले दिनों जारी स्टेट ऑफ इंडिया बर्ड रिपोर्ट-2020 के मुताबिक दिल्ली-एनसीआर(राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) इलाके में तो उन पक्षियों की संख्या में तेजी से कमी आई है, जो कभी समूहों में उड़ान भरते देखे जा सकते थे।

रिपोर्ट में देश में पाए जाने वाली 867 प्रजातियों के पक्षियों के बारे में विस्तृत अध्ययन है। इसमें बताया गया है कि 100 से ज्यादा प्रजातियों के अस्तित्व पर संकट के बादल बहुत गहरे छाए हुए हैं। जिन पक्षियों पर संकट गहराया हुआ है, उनमें से नौ प्रजातियों के पक्षी कभी दिल्ली-एनसीआर में आसानी से दिख जाते थे।

कॉमन वुड श्राईक

देश भर के पक्षियों को लेकर तैयार की गई इस रिपोर्ट को तैयार करने में साढ़े पंद्रह हजार से अधिक पक्षी प्रेमी शामिल हुए। जिन्होंने ई-बर्ड नामक मोबाइल प्लेटफार्म पर पक्षियों के देखे जाने की सूचना दी, जिसके विश्लेषण के आधार पर ऊपर वर्णित नतीजे सामने आए।

स्टेप ईगल

रिपोर्ट के अनुसार जिन पक्षियों पर सबसे ज्यादा खतरा है, उनमें कॉमन वुड श्राईक, ग्रेट ग्रे श्राईक, रूफस फ्रंटेड पिरनिया, स्माल मिनिवेट, शार्ट डोएड स्नेक ईगल, रेड नेक्ड फाल्कन, टाउनी ईगल, इजिप्शियन वल्चर और स्टेप ईगल पक्षी शामिल हैं। पिछले 25 वर्ष की तुलना में शिरकीर मलखोवा, ब्लू रॉक थ्रश, कॉमन ग्रीक शैंक, ओरियन्टल स्काई लार्क और इंडियन थिकनी की संख्या में भी कमी आई है। 146 प्रजाति के पक्षियों की संख्या में पिछले पांच बरस में कमी दर्ज की गई।

पक्षियों की निरन्तर होती कमी से ईको सिस्टम भी प्रभावित हो रहा है। लुप्त होती पक्षियों की कई प्रजातियां ऐसी हैं, जो ईको सिस्टम को सन्तुलित रखने में बड़ी मददगार होती हैं। शार्ट टोएड स्नेक ईगल(चील), रेड नेक्ड फाल्कन, टाउनी ईगल, स्टेप ईगल शिकारी पक्षी हैं। ये छोटे पक्षियों की तादाद पर अंकुश रखते हैं। वहीं, कॉमन वुड श्राईक, ग्रेट ग्रे श्राईक छोटे कीटों को अपना भोजन बनाते हैं। उधर, इजिप्शियन वल्चर(गिद्ध) मरे हुए पशुओं के मांस को अपना आहार बनाता है। फल खाने वाले पक्षी वन क्षेत्रों में मल के जरिए

स्माल मिनिवेट

फलों के बीजों का प्राकृतिक रूप से वपन भी करते हैं।

आवास के खत्म होने से पक्षियों की मुसीबत बढ़ी है। विशेषज्ञों के मुताबिक, दिल्ली-एनसीआर में जंगल और वेटलैंड(नमभूमि) में कमी आने के चलते पक्षियों को अपने रहने के लिए उपयुक्त स्थान नहीं मिल पा रहे हैं। उन्हें कीट, इल्लियां और छोटे पक्षी भोजन के रूप में नहीं मिल पा रहे हैं। इसके चलते न केवल दिल्ली-एनसीआर बल्कि देश के अन्य हिस्सों में भी परिन्दों की परवाज़ थमने के यही मुख्य कारण हैं। कंक्रीट के जंगल अर्थात् बहुमंजिला इमारतों, कारखानों को खड़ा करने के लिए काटे जा रहे पेड़ों से बिगड़े ईको सिस्टम का असर पक्षियों की ज़िंदगी पर बड़ी तीव्रता से पड़ रहा है। जिसका परिणाम यह हो रहा है कि ईको सिस्टम के लिए ज़रूरी और पक्षियों की नायाब प्रजातियां थोड़े-थोड़े अन्तराल के बाद विलुप्त होती जा रही हैं। जो भविष्य में

रेड नेक्ड फाल्कन

104	**543**	**261**
राष्ट्रीय पार्क हैं भारत में, 40,501 वर्ग किलोमीटर है संरक्षित क्षेत्र	वाइल्ड लाइफ सेंचुरी है भारत में, क्षेत्र 11 लाख वर्ग किलोमीटर	प्रजाति के पक्षियों की संख्या में 25 साल में आई गिरावट

('स्टेट ऑफ इंडियास बर्ड-2020' के आंकड़े)

यह साबित कर देंगी कि मनुष्य ने विकास के नाम पर खुद बड़ी कीमत चुकाई है, बावजूद इसके उसके अस्तित्व पर भी प्रश्न चिह्न लगा है। मौजूदा हालात में अरावली की पहाड़ियां और यमुना का नम भूमि क्षेत्र ही पक्षियों का एकमात्र सहारा है, जिसके साथ भी छेड़छाड़ की घटनाएं होती रही हैं। केन्द्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय तथा राज्य की सरकारों को पक्षियों और वन्य-प्राणियों को बचाने के लिए युद्धस्तर पर कार्यक्रम तैयार करने होंगे।

ग्रेट ग्रे श्राईक

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

HARI PRIYA FILLING STATION

Bharat Petroleum

Dealer :
Bharat Petroleum
Corporation
Ltd.

Pure for Sure

N.H. 76, Dabok, Udaipur - 313022

Ph: 0294-2655320 (P), 2484009 (R) Mob.: 9414168720

E-mail :agr_vikas14@hotmail.com, haripriyafillingstation@gmail.com

आत्मशुद्धि का अवसर चातुर्मास

✍ विनय मुनि

चातुर्मास आत्मशुद्धि का पर्व है। संस्कार शुद्धि का अवसर है। यह खान-पान व चाल-चलन में विवेक बरतने का पर्व है।

जैन, वैदिक व बौद्ध सभी परम्पराओं में चातुर्मास का विधान है। जैन परम्परा में आषाढ़ी पूर्णिमा से कार्तिक पूर्णिमा तक चार महीने पैदल विहार करने वाले जैन श्रमण एक ही स्थान पर निवास करते हैं। वैदिक संत-महात्मा भी वर्षाकाल में चातुर्मास करते हैं। वर्षावास में वर्षा ऋतु के दो माह श्रावण-भाद्रपद के महीने आते हैं। वैदिक ग्रंथों में वशिष्ठ ऋषि लिखते हैं - चातुर्मास में चार महीने विष्णु भगवान क्षीर सागर में शयन करते हैं, इसलिए यह समय धर्माराधना में बिताना चाहिए। योग, ध्यान, धर्म श्रवण, जप, तप में बिताने चाहिए। एक मायने में 8 महीने तक लगातार विहार करने वाले साधु के लिए चातुर्मास रात्रि के विश्राम की तरह होता है।

शयन का यही अर्थ है कि हमारी प्रवृत्तियां सीमित हो जाएं। सोना निवृत्ति का सूचक है और जागना प्रवृत्ति का। चातुर्मास का पर्व यही प्रेरणा देता है कि हमारा पुरुषार्थ अंतर्मुखी हो जाए। हम भले ही बाहर से सो जाएं, पर भीतर से जागते रहें। वर्षा के कारण पृथ्वी पर अगणित, असंख्य, अनंत जीवों की उत्पत्ति होती है। ऐसे सूक्ष्म जीव, जो आंखों से दिखाई नहीं देते। उनकी रक्षा के लिए श्रमण एक स्थान पर ठहरते हैं। भगवान महावीर चार महीने के लिए एक निर्जन स्थान पर जाकर तप धारण कर ध्यान लीन हो जाते थे। बाहरी दृष्टि से सो जाते थे, पर मन जागता रहता था। ग्रंथों में वर्णन मिलता है कि जयंती बहन भगवान महावीर से पूछती हैं - हे भंते! जीव का सोना अच्छा है या जागना? उत्तर में भगवान ने कहा, 'कुछ जीवों का सोना अच्छा है और कुछ का जागना।' जयंती पूछती हैं, 'अच्छा! भंते ये कैसे? किनका सोना अच्छा है और किनका जागना अच्छा है?' भगवान महावीर ने कहा, 'जो लोग बुरे भावों में जीते हैं, उनका सोना अच्छा है और जो अच्छे भावों में जीते हैं, उनका जागना।' गुरुनानक ने भी सेवा करने वालों को उजड़ने का और निरादर करने वालों को बसने का आदेश दिया है। बात एक ही है। बुराई का सिमटना और अच्छाई का फैलना अच्छा होता है।

चातुर्मास आत्मावलोकन का अवसर है। परोपकार का अवसर है। बुद्धिमान वही है, जो अवसर को पहचान ले और लाभ उठाए। चातुर्मास के इस काल में आध्यात्मिक लाभ उठाने के लिए अपनी मनोभूमि तैयार कीजिए। चिंतन, मनन, उपदेश-श्रवण तथा श्रद्धा-विश्वास को जीवन में उतारें। वर्षाकाल में जीवों की विराधना से बचने के लिए यातायात, प्रवास को सीमित करें। चलने और खाने-पीने में विवेक रखें। क्रोध, मान, माया, लोभ आदि की अग्नि को शांत करने का प्रयास करें।

With Best Compliments from
NAHAR
COLOURS & COATING LTD.
Certified ISO 9001 by
BVQi
UKAS
QUALITY MANAGEMENT
008
NCCL, House, G-1, 90-93, Sukher Industrial Park
Udaipur-313004 INDIA
Tel. : +91-294-2440307-309 | Fax : +91-294-2440310
E-mail : ramesh@naharcolours.net

Paragon
The Mobile Shop
Jio
BlackBerry
mi
INTEX
vivo
oppo
GIONEE
SMART PHONE
htc
SAMSUNG
Redmi 1S
honor
lenovo FOR THOSE WHO DO.
LAVA
MOBILE PHONE
SONY
NOKIA
Connecting People
MOTOROLA
itel
micromax
nothing like anything
and all other mobile trusted brands are available under one roof..
For More Detail
Pls Contact
Paragon
The Mobile Shop
23, inside Udaipole Udaipur
Contact No. 0294-2383373, 9829556439

तीज रूप बदला है, जज्बात नहीं

अंशु हर्ष

वर्षा की झमाझम, बादलों की चहलकदमी, आकाश में मोहक इन्द्रधनुष और धरती पर फैली हरी चादर, यही तो श्रावण मास का मनमोहक रूप है। इसी माह की 'हरियाली तीज' तो महिलाओं का खास त्यौहार है। प्रकृति मनुष्य को जीवन देती है, जल, नभ और थल मिलकर उसका और अधिक श्रृंगार करते हैं। नारी प्रकृति का ही पर्याय है, ऐसे में उसका सजना-संवरना तो स्वाभाविक है ही। 'हरियाली तीज' एक पारम्परिक पर्व है, वह मनाया तो जाएगा ही अलबत्ता 'कोरोना' के चलते उसकी सामूहिकता व व्यापकता में थोड़ी कमी ज़रूर होगी।

इस त्योहार या उत्सव को मनाने के पीछे पारंपरिक तथा सांस्कृतिक कारणों के अलावा एक और कारण है, मानवीय भावनाओं का। चूंकि प्रकृति मनुष्य को जीवन देती है, जल, नभ और थल मिलकर उसके जीवन को सुंदर बनाते हैं और जीवनयापन के अनगिनत गीत उसे उपलब्ध करवाते हैं। इसी विश्वास और श्रद्धा के साथ प्रकृति से जुड़े तमाम त्योहार तथा दिवस मनाए जाते हैं। वृक्षों, फसलों, नदियों तथा पशु-पक्षियों को पूजा जाता है, उनकी आराधना की जाती है। ताकि समृद्धि के ये सूचक हम पर अपनी कृपा सदैव बनाए रखें। हरियाली तीज को भी हम इसी कड़ी में रख सकते है। यह शिव तथा गौरी की आराधना का दिन है। गौरी और शिव सुखद व सफल दाम्पत्य जीवन को परिभाषित करते हैं, अत: इनकी पूजा इसी अभिलाषा से की जाती है कि वे पूजन तथा व्रत करने वाली को भी यही वरदान दें। स्त्रियाँ पारंपरिक तरीकों से शृंगार करती हैं तथा माँ पार्वती से यह कामना करती हैं कि उनकी जिंदगी में ये रंग हमेशा बिखरे रहें।

भगवान शंकर और माता पार्वती को समर्पित हरियाली तीज की तैयारियां महिलाएं एक महीने पहले से ही प्रारंभ कर देती हैं। उस दिन क्या पहनना है, मेकअप कैसा होगा, चूंड़ियां किस रंग की होंगी, पैरों में चप्पल किस स्टाइल की होंगी और गहने कैसे होंगे। इस तरह की तैयारियां सिर्फ विवाहित महिलाएं ही नहीं, बल्कि कुंवारी लड़कियां भी शुरू कर देती हैं। इन दिनों बाजार की रंगत भी देखते ही बनती है। पंजाब में जहां तैयारियां 15 दिन पहले से शुरू हो जाती हैं, वहीं राजस्थान में एक महीने पहले से महिलाएं श्रावणी तीज का इंतजार करने लगती हैं। लेकिन इस बार कोरोना ने इस त्योहार का मजा किरकिरा कर दिया है।

रिश्तों में घोलती मिठास

इस दिन प्रकृति परम्परा से रिश्तों में मिठास घोलती नजर आती है। प्रकृति के सतरंगी होने का प्रतीक लहरिए के रूप में दिया जाता है। इस दिन महिलाएं विशेष रूप से लहरियां पहनती हैं। नव विवाहित व शादीशुदा महिलाओं को उनके मायके व ससुराल से कोथली व सिंजारे के रूप में उपहार मिलते हैं। इनमें मेहंदी, चूड़ियां, कपड़े व घेवर आदि शामिल हैं।

पौराणिक महत्व

यह पर्व भगवान शिव और पार्वती के पुनर्मिलाप के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार मां पार्वती ने भगवान शंकर को पति के रूप में प्राप्त करने के लिए 108 जन्म लिए थे। मां पार्वती के कठोर तप और उनके 108वें जन्म में भगवान ने पार्वती को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार किया था। तभी से ऐसी मान्यता है कि इस व्रत को करने से मां पार्वती प्रसन्न होकर पतियों के दीर्घायु होने का आशीर्वाद देती हैं।

ऐसे मनाई जाती है

भारत में तीन तरह की तीज मनाई जाती है। पहली हरियाली तीज जो सावन में शुक्ल पक्ष की तृतीया को आती है, जिसमें दूध, दही व फूलों से चांद की पूजा की जाती है। दूसरी कजरी तीज, जो कृष्ण पक्ष की तृतीया को आती है व इसमें नीम की पूजा की जाती है। तीसरी हरतालिका तीज है, यह भाद्रपद महीने में मनाई जाती है। पौराणिक मान्यता के अनुसार इसी दिन पार्वती ने सौ वर्षों की तपस्या के बाद भगवान शिव को पाया था। अपने सुखी दाम्पत्य जीवन की कामना के लिए इस दिन उपवास कर भगवान शंकर-पार्वती की बालू से मूर्ति बनाकर पूजन किया जाता है। सुंदर वस्त्र धारण किए जाते हैं। मान्यता के अनुसार इस व्रत को करने वाली स्त्रियों को पार्वती के समान सुख प्राप्त होता है। रिमझिम बरसात, घेवर की मिठास, रंग-बिरंगा लहरिया, बागों में झूले और मेहंदी लगे हाथ। यही नजारा होता है, सावन की तीज का। तीज का त्यौहार आज भी उतना ही महत्वपूर्ण है, हर महिला के लिए जो बरसों पहले था। हां, परम्पराओं में आधुनिकता का संगम देखते हैं, पर भावनाएं आज भी वही हैं।

मेहंदी का रंग

एक दौर था जब हाथों में मेहंदी तो खूब लगायी जाती थी, पर किसी विशेष डिजाइन में नहीं। बस तीज के एक दिन पहले अपने घर के कार्यों को पूरा कर महिलाएं रात को मेहंदी लगाती थीं। मेहंदी से हाथ भर कर दोनों हाथ कस कर एक कपड़े से बांध दिए जाते थे, फिर सुबह ही हाथ खोले जाते। अगले दिन सबसे पहले उठ कर एक-दूसरे से यह पूछा जाता था कि किसकी मेहंदी कैसी रची, किसका रंग कैसा आया। एक मान्यता थी कि जिसकी मेहंदी सबसे गाढ़ी रचेगी, उसकी सास उसे सबसे ज्यादा प्यार करने वाली होगी।

रंगबिरंगा लहरिया

अब सिर्फ तीज ही नहीं, बल्कि पूरा सावन लड़कियां और महिलाएं लहरिया पहनती हैं, क्योंकि कामकाजी महिलाएं ज्यादातर ऑफिस में रहती है और उन्हें हर रोज तरह-तरह के कपड़े पहनने के लिए चाहिए होते हैं। तीज के दिन भी अगर ऑफिस जरूरी होता है, तो काम से छुट्टी नहीं मिलती है और त्योहार वहीं मनाया जाता है।

बागों में झूले

यह मुख्यत: स्त्रियों का त्योहार है। इस समय जब प्रकृति चारों तरफ हरियाली की चादर सी बिछा देती है, तो प्रकृति की इस छटा का देखकर मन पुलकित होकर नाच उठता है। जगह-जगह झूले पड़ते हैं। स्त्रियों के समूह गीत गा-गाकर झूला झूलते हैं।

अलख

अलख नयन

आई हॉस्पिटल

उदयपुर

Super Specialized Eye Care Institute

विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं

मोतियाबिन्द (कैटरेक्ट)

- आत्याधुनिक विश्वस्तरीय तकनीक
- युनिफोकल/मल्टीफोकल/टॉरिक लैंस
- जन्मजात मातियाबिंद सर्जरी
- एलकॉन सेल्चुरियन, इन्फिनिटी मशीन
- बिना टांके, बिना इंजेक्शन, बिना पट्टी

कालापानी (ग्लूकोमा)

- Filtering and Combined Procedures
- डायोड़ लेजर ▪ ट्रेबेक्यूलोप्लास्टी
- Yag Laser, Iridotomy ▪ Gonioscopy
- HVF (ZEISS)
- Pachymetry ▪ NCT

लेसिक लेज़र

- लेजर द्वारा चश्मे के नंबर हटाना
- Epi-लेसिक ▪ लेसिक ▪ PTK
- रिफ्रेक्टिव लैंस (ICL)

बच्चों मे भैंगापन का उपचार

पर्दे की बिमारीयाँ (रेटिना)

- डिटेचमेन्ट सर्जरी रेड व ग्रीन लेजर
- फ्लुरोसिन व ICG एन्जियोग्राफी मैक्यूलर होल सर्जरी
- डिसलोकेटड लैंस सर्जरी ▪ डायेबेटिक रेटिनोपैथी की
- जाँच, इलाज व सर्जरी ▪ Photo-Dynamic Therapy-AMD
- नवजात शिशुओं में ROP रेटिनोपैथी ऑफ प्रीमेच्युरिटी का उपचार

ऑक्यूलोप्लास्टि

- Ptosis Surgery
- Trauma (आँखों की चोट)
- Entropion & Ectropion
- DCR (नासूर) ▪ Botox
- Enucleation & Evisceration
- Ocular Tumor Surgery
- Ocular Plastic Surgery

कॉर्निया

- Corneal Tear ▪ केरेटोकॉनस, C3R
- Pentacam ▪ Specular Microsocpy
- टेरिजियम (नाखुना) ऑटोग्राफ्ट
- कॉर्निया प्रत्यारोपण (ट्रान्सपलान्टेशन)
- DALK, DSEK, DMEK Surgery
- नेत्र कोष (आई बैंक व प्रत्यारोपण केन्द्र)

सुपर स्पेशिलाइज्ड एवं अनुभवी नेत्र विशेषज्ञ

डॉ. एल एस. झाला
कैटरेक्ट एंड रिफ्रेक्टिव सर्जन

डॉ. नितिश कथूरिया
कॉर्निया विशेषज्ञ

डॉ. सुमित वार्ष्णेय
कैटरेक्ट / ऑक्यूलोप्लास्टिक विशेषज्ञ

डॉ. आंचल राठौड़
ग्लूकोमा विशेषज्ञ

डॉ. अरविंद जैन
रेटिना विशेषज्ञ

उत्तम दृष्टि सबके लिए

Quality Vision to all

मुख्य केन्द्र : 'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
✆ 0294-2490970, 71, 72, 9772204624
सिटी सेन्टर : अशोक नगर, उदयपुर ✆ 0294.2413050, 2528854, 9772204620
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

सुखोई की निगरानी में हिंन्द महासागर

चीन और पाकिस्तान की नापाक चालों को मात देने के लिए दक्षिण भारत क्षेत्र में हिन्द महासागर की निगरानी के लिए अत्याधुनिक युद्धक विमान सुखोई-30 एमकेआई का पहला स्क्वाड्रन वायुसेना स्टेशन पर तैनात कर दिया गया है। सुखोई 'ब्रह्मोस' सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल से लैस भी है।

✍ जगदीश सालवी

20 जनवरी 2020 को तंजावुर के एयरबेस(वायुसेना स्टेशन) पर हिन्द महासागर की सुरक्षा के मद्देनज़र सुखोई-30 की तैनाती की गई है। वायुसेना के इस अचूक हथियार के नए स्क्वाड्रन से भारतीय वायुसेना की वायु रक्षा क्षमता में इजाफ़ा होगा और हिन्द महासागर क्षेत्र की निगरानी सुनिश्चित होगी। सुपरसोनिक मिसाइल 'ब्रह्मोस' से लैस सुखोई का यह पहला स्क्वाड्रन है, जिसे दक्षिण भारत के किसी सैन्य अड्डे पर तैनात किया गया है। आधुनिक तकनीकों से लैस यह विमान मौसम कैसा भी हो, वृहद भूमिका निभाने में समर्थ है। इसकी 20 जनवरी, 2020 को तैनातगी के दौरान चीफ ऑफ डिफेन्स स्टाफ बिपिन रावत, वायुसेना प्रमुख आर.के. सिंह भदौरिया, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन(डीआरडीओ) के अध्यक्ष जी. सतीश रेड्डी सहित शीर्ष अधिकारी मौजूद थे।

पड़ौसियों को करारा जवाब : ब्रह्मोस क्रूज मिसाइलों से लैस सुखोई लड़ाकू विमान भारतीय सीमा की रक्षा करने के साथ ही चीन-पाकिस्तान को किसी भी स्थिति-परिस्थिति में जवाब देने में सक्षम है। यह किसी एयरक्राफ्ट कैरियर को भी तुरन्त तबाह कर सकता है। इस मिसाइल की गति इतनी तीव्र है कि यह अपने दुश्मनों को जवाबी कार्रवाई से पहले ही उन्हें नेस्तनाबूत कर देगी।

सेनाओं के लिए बेहतर : तंजावुर एयरबेस की अवस्थिति तीनों सेनाओं के लिए बेहतर है। संयोग से, दक्षिणी प्रायद्वीप में तंजावुर भारत के लिए रणनीतिक रूप से बहुत लाभ की जगह पर है। यहां से समुद्र पर नियंत्रण के साथ भारतीय जल व थल सेना को जल्द और समग्र सहयोग भी प्रदान किया जा सकता है। इससे पहले 11 सुखोई-30 विमान पश्चिमी और पूर्वी मोर्चों पर तैनात किए जा चुके हैं।

अग्रिम पंक्ति का लड़ाकू विमान : सुखोई-30 एमकेआई वायुसेना का अग्रिम पंक्ति का बहुपयोगी लड़ाकू विमान है। इसका निर्माण रूस की सैन्य विमान निर्माता कम्पनी सुखोई तथा भारत के हिन्दुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड के साझा सहयोग से किया गया है। इस पर लगी 'ब्रह्मोस' दुनिया की ऐसी पहली मिसाइल है, जो जल-थल-नभ से दागी जा सकती है।

सुखोई-30 में 'ब्रह्मोस' मिसाइल लगाने का काम भारत में ही किया गया है। जिसे ब्रह्मोस एयरस्पेस, एचएल और वायुसेना ने संयुक्त रूप से अंजाम दिया। सुखोई 2002 में भारतीय वायुसेना में शामिल किया गया था। सन् 2009 तक इसके हमारे पास 6 स्क्वाड्रन यानी 105 विमान थे। हिन्दुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड द्वारा ऐसे 280 विमान बनाने की योजना है।

'द टाइगर शार्क' : सुखोई-30 लड़ाकू विमान को नया नाम 'द टाइगर शार्क' दिया गया है। यह 2.5 टन वजनी सुपरसोनिक 'ब्रह्मोस' क्रूज मिसाइल ले जाने में सक्षम है। 'टाइगर शार्क' चौथी पीढ़ी के सुखोई का 12वां बेड़ा है, जिसे तंजावुर में तैनात किया गया है। यह एक बार ईंधन भरने के बाद अपने साथ 8000 किलो हथियार लेकर 5200 किलोमीटर तक उड़ सकता है। यह बमबारी के साथ मिसाइल भी दाग सकता है। इसकी उड़ने की रफ्तार 2450 किलोमीटर प्रति घंटा है। यह तीन हजार किलोमीटर की दूरी तक जाकर भी दुश्मन पर हमला बोल सकता है। इस लड़ाकू विमान में दो एएल टर्बोफैन इंजन लगे हैं, जो इसे तेज रफ्तार देते हैं। यह हवा में रहते हुए ईंधन भर सकता है। इसमें अलग-अलग तरह के बम तथा प्रक्षेपास्त्र ले जाने के लिए 12 स्थान हैं। इसमें 30 मिमी की एक तोप भी लगी हुई है।

निजी क्षेत्र में सबसे रियायती दर पर कैंसर का इलाज
विश्वविख्यात कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. कीर्ति जैन के नेतृत्व में संचालित
दक्षिणी राजस्थान का पूर्ण अत्याधुनिक कैंसर सेंटर
सबसे न्यूनतम पैकेज पर
3D CRT | IMRT | IGRT
मेडिकल ऑन्कोलॉजी
पीडियाट्रिक ऑन्कोलॉजी
ऑन्कोरेडियोलॉजी
न्यूरोऑन्को सर्जरी
फिजियो एवं रिहेबिलिटेशन विभाग
रेडिएशन ऑन्कोलॉजी
दक्षिणी राजस्थान की पहली अत्याधुनिक LINAC मशीन
सर्जिकल ऑन्कोलॉजी
ऑन्कोपेथोलॉजी
ऑन्कोप्लास्टिक सर्जरी
पेन क्लिनिक
फूड एवं न्यूट्रीशन विभाग
एक ही छत के नीचे सभी प्रकार के कैंसर के इलाज की सुविधा
इंटरनेशनल कैंसर बोर्ड से इलाज
देश की नामी संस्थाओं से प्रशिक्षित डॉक्टर्स व स्टाफ
ईएसआईसी, रेलवे, कॉर्पोरेट व टीपीए से अनुबन्धित
आयुष्मान भारत महात्मा गांधी राजस्थान स्वास्थ्य बीमा योजना से अधिकृत
जी.बी.एच. जनरल हॉस्पिटल मेमोरियल कैंसर सेन्टर
ट्रांसपोर्ट नगर, बेड़वास, उदयपुर । सम्पर्क : 0294-3060600, 3536000

कोरोना से अर्थव्यवस्था पस्त

बाजारों में कोहराम

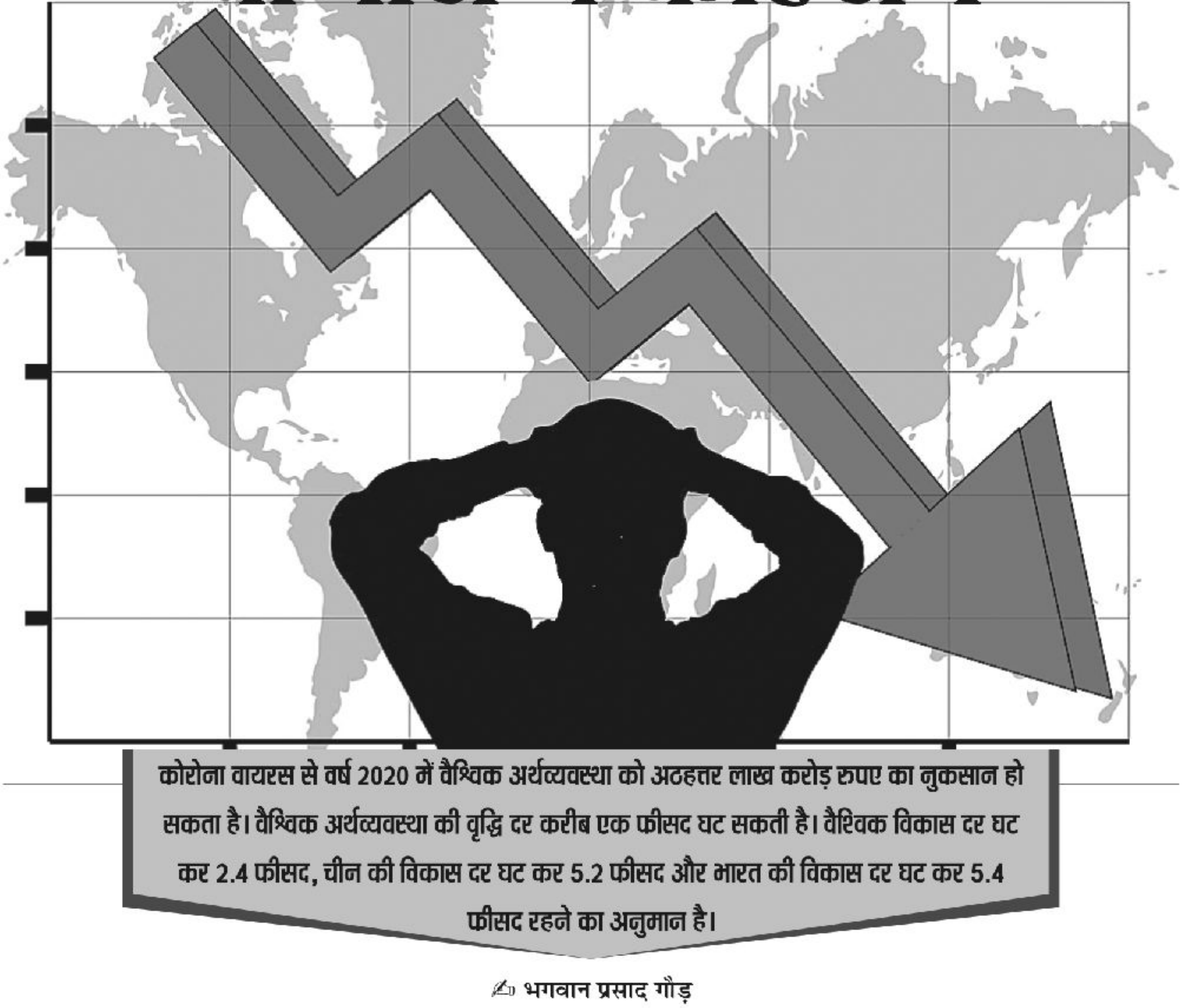

कोरोना वायरस से वर्ष 2020 में वैश्विक अर्थव्यवस्था को अठहत्तर लाख करोड़ रुपए का नुकसान हो सकता है। वैश्विक अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर करीब एक फीसद घट सकती है। वैश्विक विकास दर घट कर 2.4 फीसद, चीन की विकास दर घट कर 5.2 फीसद और भारत की विकास दर घट कर 5.4 फीसद रहने का अनुमान है।

✍ भगवान प्रसाद गौड़

कोविड-19 के प्रकोप से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को गहरा धक्का लगा है। भारत जैसे विकासशील देश की लड़खड़ाती अर्थव्यवस्था के लिए एकबारगी तो यह गंभीर झटका है। वैश्विक व्यापार में मंदी से मांग घट रही है, कई छोटे और मंझले व्यापार बंद होने की कगार पर हैं। विकसित देशों की तुलना में भारत कैसे इसका मुकाबला करेगा ? यह एक यक्ष प्रश्न है।

कोरोना के चलते दुनिया की अर्थव्यवस्था में भारी मंदी दिख रही है। जिसका असर आने वाले दिनों में अपेक्षाकृत ज्यादा ही रहने वाला है। इतिहास में ऐसा प्रथम बार होगा कि मंदी का कारण व्यापार न होकर मानवजनित उत्पादकता में गिरावट होगा। अनुमान है कि कोविड-19 से विश्व अर्थव्यवस्था को 4 ट्रिलियन डॉलर यानि तीन लाख अरब रुपये का नुकसान होगा। जो पूरी दुनिया की जीडीपी का लगभग 5% है। भारत, अमेरिका और यूरोपीय देशों के बाजारों में कोहराम है। निवेशकों को करोड़ों रुपयों का चूना लग रहा है। वैश्विक अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर 1% घट सकती है। वैश्विक विकास दर 2.4%, चीन की विकास दर घटकर 5.2% और भारत की विकास दर घटकर 5.4% के आस-पास रह सकती है।

इस मंदी से कोई भी देश अछूता नहीं रहेगा। लोगों में खर्च की क्षमता में कमी आई है, निवेश में संशय का माहौल है। सरकारों के सामने बेरोजगारी दूर करने और रोजगार सृजन का संकट पैदा हो गया है। एप्पल, नाइकी और माइक्रोसॉफ्ट जैसी दर्जनों बड़ी कम्पनियों ने भी चेतावनी दे दी है।

आर्थिक दबाव में ये सेक्टर

1. **दवा कम्पनीज :** फार्मा कम्पनियों की आमदनी की बात नहीं बल्कि मानवीय कीमत भी होती है। केमिस्ट सेनेटाइजर और मास्क के ऑर्डर में लगा है अन्य दवाइओं की डिलेवरी अधर झूल में है।
2. **पर्यटन उद्योग :** कोरोना प्रकोप से लगी पाबन्दियों और सुरक्षा दृष्टि से जारी एडवाइजरी पर्यटन पर भारी है। शायद ये मेडिकल इमरजेंसी सार्स और स्वाइन फ्लू से बड़ी और घातक है। ट्रेवेल एण्ड टूरिज्म काउंसिल और ऑक्सफोर्ड इकोनॉमिक्स ने विश्व के पर्यटन बिजनेस का अध्ययन कर अनुमान लगाया है कि घाटा 22 अरब डॉलर तक पहुंच सकता है।
3. **ऑटोमोबाइल उद्योग :** सोसायटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल्स मैन्यूफैक्चरर्स का कहना है कि लगभग 3.7 करोड़ इस क्षेत्र में लगे हैं। कोरोना के कारण भारत सहित चीन सुस्त पड़ गया है। चीन भी मंदी के कारण कल-पुर्जों की आपूर्ति नहीं कर पा रहा है।
4. **ज्वेलरी कारोबार :** ज्वेलरी सेक्टर में करीब सवा अरब डॉलर का नुकसान होगा। भारत में तराशे हीरे और ज्वेलरी का निर्यात केन्द्र चाइना और हांगकांग भी इस समय कोरोना की चपेट में है।
5. **शेयर मार्केट :** ज्यादातर लोग अपना पैसा बाजार से निकालने लगे हैं। विश्व का सबसे बड़ा उपभोक्ता अमेरिका भी घरों से काम करने लगा है। अस्थिरता का माहौल धुंआ सा चहुंतरफ छाया है।
6. **कपड़ा मार्केट :** भारत दरअसल विश्व का सबसे बड़ा कॉटन निर्यातक है। वैश्विक बाजारों में आई मांग की कमी के चलते धन्धे ठप्प हैं। अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों में कॉटन के दामों में गिरावट आई है। घरेलू कपड़ा उद्योग के प्रोसेसिंग खर्च में 10% फीसदी इजाफा होने से कपड़ों के दाम बढ़ जाएंगे।

'सीएसई द्वारा प्रकाशित स्टेट ऑफ इण्डियाज एनवायरमेंट इन फिगर्स 2020 रिपोर्ट के अनुसार – कोरोना महामारी से विश्व में 26.5 करोड़ लोगों के सामने भूखमरी का खतरा है जबकि भारत में 1 करोड़ 20 लाख लोग भूख से प्रभावित होंगे।'

आंकड़ों की जुबानी संभावित मंदी

10 खरब डॉलर या 74 लाख करोड़ रु. का अनुमानित असर पड़ सकता है 2020 में वैश्विक अर्थव्यवस्था को

34.8 करोड़ डॉलर या 2,575 करोड़ रु. का असर भारत को चीन के सप्लाई चेन में व्यवधान से

18% खरब डॉलर हिस्से है चीन की भारत के कुल सामान के आयात में

60% खरब डॉलर सामान का व्यापार भारत का पश्चिमी एशिया, चीन, यूरोपीय संघ और अमेरिका से

50 अरब डॉलर या 3.7 लाख करोड़ रु. का व्यापारिक नुकसान सिर्फ चीन को अकेले

सकारात्मक प्रभाव

- स्वास्थ्य के क्षेत्र में तेजी से रोजगार की बाढ़ आयेगी। डॉक्टर्स, नर्स, मेडिकल स्टोर्स और वार्ड बॉय व सफाई कर्मियों की मांग बढ़ेगी। बीमा क्षेत्र में उठाव आयेगा। हर व्यक्ति सुरक्षित होने की होड़ में बीमा खरीदना चाहेगा।
- स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के कारण आयुर्वेद सेक्टर में लोगों का विश्वास बढ़ा है। इम्युनिटी पावर बढ़ाने की होड़ में आयुर्वेद सेक्टर में रोजगार की विपुल संभावनाएं बनेगी।

'आत्मनिर्भर भारत' से अर्थव्यवस्था में गति

लड़खड़ाती भारतीय अर्थव्यवस्था को संभालने तथा कोरोना संकट से उबरने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जीडीपी का 10% अर्थात् 20 लाख करोड़ रुपये का आर्थिक पैकेज घोषित किया है। आर्थिक मामलों के विशेषज्ञों का मानना है कि इससे कुछ हद तक बाजार पर काबू पाया जा सकेगा। प्रधानमंत्री मोदी ने दूरदर्शिता का परिचय देते हुए – दो मंत्र दिये – पहला, लोकल को वोकल बनाना और दूसरा, आत्मनिर्भर भारत।

जीडीपी के हिसाब से किस देश ने कितना दिया पैकेज

जापान	अमेरिका	स्वीडन	जर्मनी	भारत	फ्रांस
21.1%	13%	12%	10.7%	10%	9.3%
स्पेन	इटली	यूके	चीन	द.कोरिया	
7.3%	5.7%	5%	3.8%	2.2%	

देश में बनी वस्तुओं को प्रमोट करने पर जोर देते हुए उन्होंने लोकल, ग्लोबल और वॉकल का देशवासियों को अर्थ समझाते हुए कहा कि इससे उनकी आय क्षमता बढ़ेगी और अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी।

वास्तव में मंदी से निकलने के लिए अन्य विकसित और विकासशील देशों ने बूस्टर पैकेज घोषित किए हैं.... उस दृष्टि से भारत का प्रयास भी अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने की दिशा में उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

आपदा में अवसर 'आत्मनिर्भर भारत'

भारत को संकट से उबारने के साथ एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में स्थापित करने के लिए 'आत्मनिर्भर भारत' संकल्प बहुत ही कारगर हो सकता है। इस कदम से दुनिया के बड़े राष्ट्र भारत से व्यापार करने को उत्सुक होंगे। महानगरों की रौनक बढ़ेगी, गांवों का विकास होगा, कृषि उन्नत होगी, स्मार्ट सीटी, कस्बों और बाजारों का विस्तार भी संभव है। भारत नई तकनीक का बड़ा उपभोक्ता और बाजार बनकर उभरेगा। सप्लाई चेन को सुदृढ़ करने और गुणवत्तायुक्त उत्पादों को बढ़ाने के साथ स्वदेशी खपत और निर्यात हम सबके लिए एक आशातीत अवसर सिद्ध होगा। अर्थशास्त्रियों का मानना है कि भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोरोना का सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही तरफ का प्रभाव होगा। सप्लाई चेन प्रभावित होने से कई चीजों के लिए कच्चे माल की कमी हो सकती है तो कई चीजें सस्ती भी हो जाएंगी। कच्चे माल की कमी और उत्पादन लागत बढ़ने की सूरत में आयात बिल ज़रूर बढ़ सकता है।

विश्व बैंक से 1 अरब डॉलर का फंड

भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूती देने के लिए विश्व बैंक 76 अरब रुपये की मदद करने जा रहा है। जिसका उपयोग कोरोना वायरस के रोगियों की बेहतर जांच, निरीक्षण व प्रयोगशाला निदान जैसे कार्यों में किया जाएगा।

मुनि सुधर्म सागर का स्वर्गवास

उदयपुर। आदिनाथ मानव कल्याण समिति के संस्थापक मुनि सुधर्म सागर का 14 जून को स्वर्गवास हो गया। वे 78 वर्ष के थे। कविता गांव में मुनि की तबीयत खराब होने पर उन्हें एमबी चिकित्सालय लाया गया। जहां उपचार के दौरान देहांत हो गया। वे काफी समय से अस्वस्थ चल रहे थे। अंतिम यात्रा में यशवंत तलेसरा, श्रमणी आनन्दी बाई, रणजीत मेहता, अनिल वैष्णव, भरत शाह, रोशन अरोड़ा कविता गांव के श्रावक शामिल हुए। मूलतः गुजरात निवासी मुनि सुधर्म सागर का बचपन उदयपुर और कविता में बीता। शिक्षा दीक्षा भी यहीं हुई थी। सांसारिक जीवन त्यागकर 38 वर्ष पूर्व दीक्षा ग्रहण कर मुनि बने। उनके निधन पर विभिन्न सम्प्रदायों के सन्तों व सामाजिक कार्यकर्त्ताओं ने शोक प्रकट किया है।

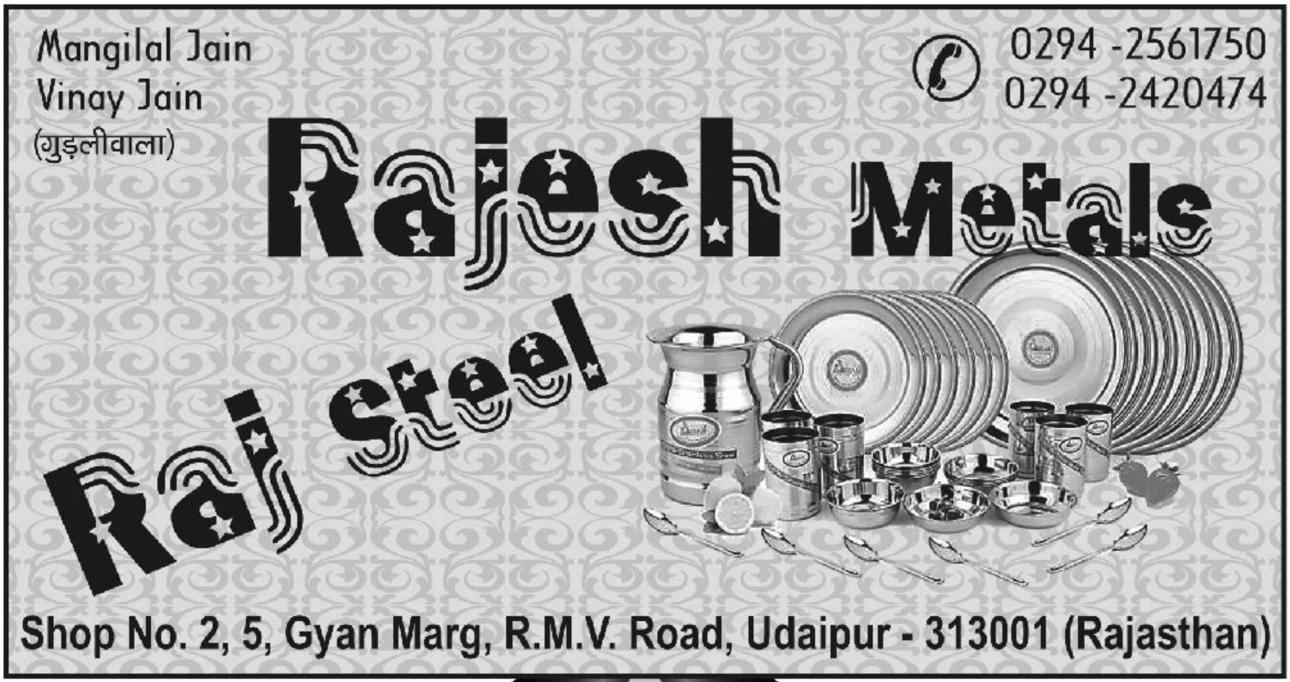

कांग्रेस में 'किंगमेकर' थे कामराज

तमिलनाडु की राजनीति में बिल्कुल निचले स्तर से राजनीतिक जीवन शुरू कर देश के दो प्रधानमंत्री चुनने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने के कारण 'किंगमेकर' कहे जाने वाले के. कामराज साठ के दशक में कांग्रेस संगठन में सुधार के लिए बनाए गए 'कामराज प्लान' के कारण काफी चर्चित हुए।

प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के करीबी और तमिलनाडु(तत्कालीन मद्रास) के तीन बार मुख्यमंत्री रहे कामराज को कांग्रेस में 'किंगमेकर' के नाम से जाना जाता था। राष्ट्रीय स्तर की राजनीति में नेहरू ही उन्हें लेकर आए थे। कामराज ने साठ के दशक की शुरुआत में महसूस किया कि कांग्रेस की पकड़ कमजोर होती जा रही है। इस पर उन्होंने नेहरू को एक योजना सुझाई और खुद दो अक्तूबर 1963 को तमिलनाडु के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया।

उन्होंने सुझाया कि पार्टी के बड़े नेता सरकार में अपने पदों से इस्तीफा दे दें और अपनी ऊर्जा कांग्रेस में नई जान फूंकने के लिए लगाएं। उनकी इस योजना के तहत उन्होंने खुद भी इस्तीफा दिया और लाल बहादुर शास्त्री, जगजीवन राम, मोरारजी देसाई और एस के पाटील जैसे वरिष्ठतम नेताओं ने भी सरकारी पद त्याग दिए। यही योजना 'कामराज प्लान' के नाम से मशहूर हुई।

कहा जाता है कि वे अपने 'कामराज प्लान' की बदौलत केन्द्र की राजनीति में इतने मजबूत हो गए कि नेहरू के निधन के बाद शास्त्री और इंदिरा गांधी को प्रधानमंत्री बनवाने में उनकी भूमिका 'किंगमेकर' की रही। वह तीन बार कांग्रेस अध्यक्ष भी रहे। दक्षिण भारत की राजनीति में कामराज एक ऐसे भी नेता रहे जिन्हें शिक्षा जैसे क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए जाना जाता है।

आजादी के बाद 13 अप्रेल, 1954 को कामराज ने इच्छा न होते हुए भी तमिलनाडु का मुख्यमंत्री पद स्वीकार किया। लेकिन प्रदेश को एक ऐसा नेता मिल गया जो उनके लिए कई क्रांतिकारी कदम उठाने वाला था। कामराज ने उनके नेतृत्व को चुनौती देने वाले सी. सुब्रमण्यम और एम. भक्तवत्सलम को कैबिनेट में शामिल कर सबको चौंका दिया।

कामराज लगातार तीन बार तमिलनाडु के मुख्यमंत्री रहे। उन्होंने प्रदेश की साक्षरता दर, जो कभी सात फीसद हुआ करती थी, को बढ़ाकर 37 फीसदी तक पहुंचा दिया था। वे एक कद्दावर नेता थे। तमिलनाडु में उनकी नेतृत्व क्षमता और उनके कामों की बराबरी किसी और से नहीं की जा सकती। उन्होंने आजादी के बाद तमिलनाडु में जन्मी पीढ़ी के लिए बुनियादी संरचना पुख्ता की थी। शिक्षा क्षेत्र में कई अहम फैसले किए। मसलन कोई भी गांव बिना प्राथमिक स्कूल के न रहे। निरक्षरता हटाने की मुहिम के तहत कक्षा 11वीं तक नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा लागू कर दी। स्कूलों में गरीब बच्चों को मध्याह्न भोजन देने की योजना वे ही लेकर आए थे। शिक्षा क्षेत्र में बुनियादी काम के अलावा तमिलनाडु को उन्होंने एक और सौगात यह दी कि वह स्कूली और उच्च शिक्षा में तमिल भाषा को एक माध्यम के तौर पर लेकर आए। उन्हीं के कार्यकाल से तमिलनाडु में बच्चे तमिल में शिक्षा हासिल कर सके।

कामराज का जन्म 15 जुलाई 1903 को तमिलनाडु के विरूधुनगर में हुआ था। उनका मूल नाम कामाक्षी कुमारस्वामी नादेर था लेकिन बाद में वह के. कामराज के नाम से ही जाने गए। कामराज के पिता व्यापारी थे। पिता की असमय मौत ने उनके परिवार को परेशानी में डाल दिया।

कामराज अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर पाए लेकिन जॉर्ज जोसेफ के नेतृत्व वाले 'वैकम' सत्याग्रह ने उन्हें आकर्षित किया। महज 16 वर्ष की उम्र में कामराज कांग्रेस में शामिल हो गए। आजादी से पहले के अपने राजनीतिक जीवन में कामराज कई बार जेल गए। जेल में रहते हुए ही उन्हें म्युनिसिपल काउंसिल का अध्यक्ष चुना गया। लेकिन रिहाई के नौ महीने बाद उन्होंने इस्तीफा दे दिया और कहा – किसी को तब तक कोई पद स्वीकार नहीं करना चाहिए जब तक वह उसके साथ पूरा न्याय न कर सके।

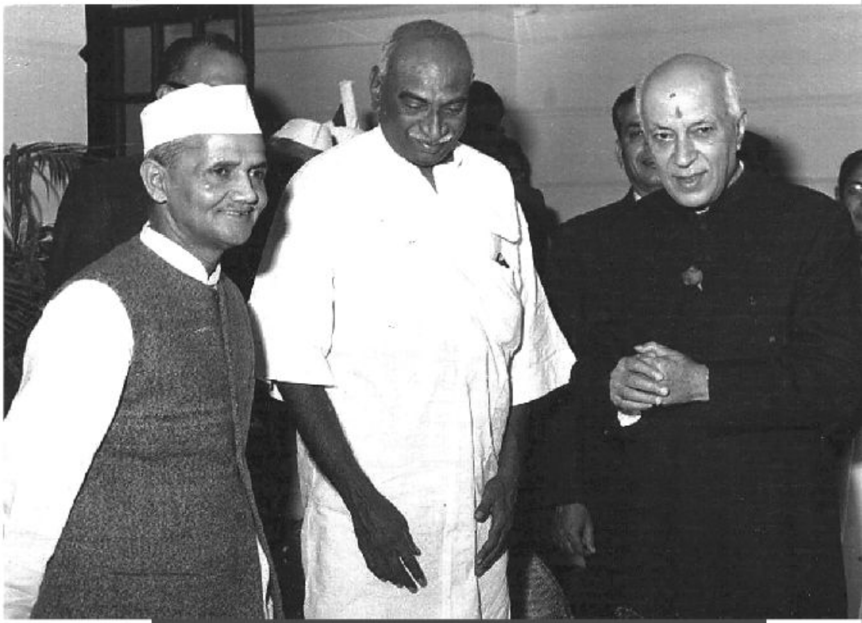

तत्कालीन केन्द्रीयमंत्री लाल बहादुर शास्त्री व प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरु के साथ के. कामराज

कामराज के राजनीतिक गुरु सत्यमूर्ति थे। उन्होंने कामराज में एक निष्ठावान और कुशल संगठक देखा। कामराज में गजब का राजनीतिक कौशल था। उनकी छवि अच्छी थी और उन्होंने हमेशा पड़ोसी राज्यों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए। मौजूदा राजनैतिक व्यवहार और आचरण को देखते हुए उनके जैसे नेताओं की जरूरत है। दो अक्तूबर 1975 को कामराज का निधन हुआ। उन्हें 1976 में मरणोपरांत भारत रत्न से नवाजा गया।

✍ उमेश शर्मा

सावधान

यातायात नियम हुए और सख्त

पहली अप्रैल से जारी होने वाले मोटर वाहन अधिनियम 2020 में यातायात नियमों का उल्लंघन करना महंगा पड़ेगा। कार ड्राइविंग में लापरवाही बरतने पर भारी जुर्माने के साथ जेल की हवा खानी पड़ सकती है। गलती दोहराने पर ड्राइविंग लाइसेंस जब्त किया जाएगा। राज्यों की यातायात पुलिस और परिवहन विभाग द्वारा काटे गए चालान अब डिजिटल लॉकर-एम-परिवहन पोर्टल पर ऑनलाइन अपलोड करना अनिवार्य किया जा रहा है। यातायात पुलिसकर्मी अथवा परिवहन विभाग के अधिकारी को चालान काटने के बाद डिजिटल लॉकर-एम परिवहन पोर्टल पर उसका उल्लेख करना जरूरी होगा। पोर्टल में मौजूद वाहन के इलेक्ट्रॉनिक दस्तावेज जैसे पंजीकरण प्रमाण-पत्र, परमिट, प्रदूषण प्रमाण पत्र, बीमा, ड्राइविंग लाइसेंस व फिटनेस प्रमाण पत्र मान्य होंगे। अधिकारी दस्तावेजों की मूल कॉपी की मांग नहीं करेंगे। अधिकारी इलेक्ट्रॉनिक दस्तावेजों का ई-चालान करेंगे और रसीद भी देंगे।

अधिकारी प्रतिदिन किए गए सभी ई-चालान ऑनलाइन पोर्टल पर अपलोड करेंगे। इससे किसी भी राज्य में यातायात पुलिस-परिवहन अधिकारी को पोर्टल खोलने पर कार्रवाई की जानकारी मिल सकेगी। इलेक्ट्रॉनिक दस्तावेज के अलावा कुछ गंभीर अपराध-यातायात उल्लंघन होने पर अधिकारी को मूल दस्तावेज की कॉपी जब्त करने का अधिकार होगा।

सजा और प्रावधान

- कार चलाते मोबाइल का प्रयोग मार्ग का पता लगाने के लिए किया जा सकता है।
- हाथ में लेकर मोबाइल से बात करने पर जुर्माने का प्रावधान है।
- ब्लूटूथ से बात करने पर जुर्माना नहीं लगेगा।
- नए कानून में मोबाइल पर बात करने पर 500-5000 रुपए जुर्माना है।
- शराब पीकर कार चलाने पर 15,000 रुपए तक जुर्माना और दो साल तक की जेल है।
- गलती दोहराने पर ड्राइविंग लाइसेंस रद्द हो जाएगा।
- खतरनाक ड्राइविंग(स्टंट) करने पर 1000-5000 रुपए जुर्माना और छह माह की सजा।
- दूसरी बार पकड़े जाने पर 10,000 रुपए जुर्माना व दो साल की कैद होगी।

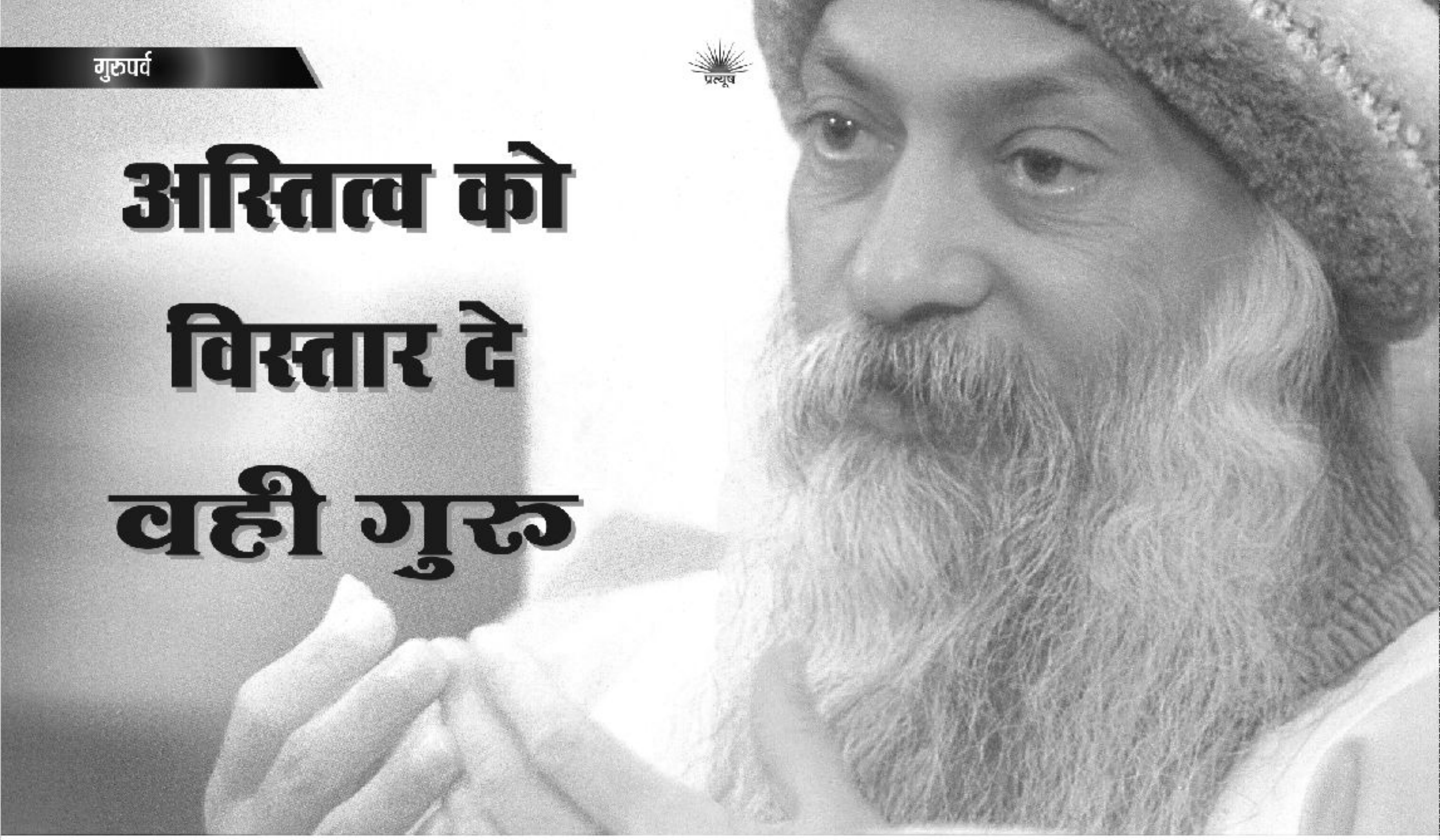

अस्तित्व को विस्तार दे वही गुरु

*गुरुपूर्णिमा अथवा व्यास पूर्णिमा का भारतीय संस्कृति में विशेष महत्व है। शिष्य को योग्य गुरु व गुरु को योग्य शिष्य मिलना आसान नहीं है। गुरु को भारतीय संस्कृति में ऐसे आश्रम के तौर पर देखा गया है, जो विपरीत अथवा कठिन परिस्थितियों में मार्गदर्शक बनता है। कुरुक्षेत्र में जब अर्जुन किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया तो श्रीकृष्ण ने गुरु के रूप में उसका मार्गदर्शन किया। उसे जीवन के सार की शिक्षा दी। गुरु की महत्ता ही इसलिए है कि हमारी समस्याओं का समाधान उन्हीं के पास होता है। प्रस्तुत है गुरु-शिष्य सम्बन्धों पर **ओशो** व्याख्यान के अंश।*

गुरु-शिष्य संबंध संयोग मात्र भी है और एक होशपूर्ण चुनाव भी। यह दोनों है। जहां तक गुरु का सवाल है, यह पूर्णतः होशपूर्ण चुनाव है। जहां तक शिष्य का प्रश्न है, यह संयोग ही हो सकता है, क्योंकि अभी होश उसके पास है ही नहीं।

मिस्र के रहस्यवादी कहते हैं – जब शिष्य तैयार हो जाता है तो गुरु प्रकट हो जाता है। गुरु के लिए तो यह पूरी तरह से एक होशपूर्ण बात है। एक सूफी कहानी इसे समझने में तुम्हारी सहायता करेगी।

सत्य को जानने की गहन अभीप्सा में एक नवयुवक ने अपने परिवार, अपने संसार को त्याग दिया और गुरु की खोज में निकला। जब वह नगर के बाहर निकल रहा था, तभी उसने एक वृद्ध को देखा। उसकी आयु लगभग साठ वर्ष रही होगी। वह एक वृक्ष के नीचे बैठा था। वह इतना शांत, आनन्दित, चुम्बकीय आकर्षण वाला था कि युवक अपने आप उसकी ओर खिंचा चला गया। वह उसके समीप पहुंच कर बोला, 'मैं एक गुरु की तलाश में हूं। मैं आपके ज्ञान की सुगंध को अनुभव कर सकता हूं। शायद आप मुझे बता सकेंगे कि मुझे कहां जाना चाहिए व गुरु की कसौटी क्या है..... मैं यह कैसे निश्चय करूंगा कि यही मेरा गुरु है?'

उस वृद्ध ने कहा कि यह तो बहुत सरल है, और उसने विस्तारपूर्वक बिल्कुल ठीक-ठीक वर्णन कर दिया कि वह व्यक्ति कैसा होगा, किस तरह का वातावरण उसके आसपास होगा, वह कितनी आयु का होगा। यहां तक कि वह कौन से वृक्ष के नीचे बैठा मिलेगा, यह भी बता दिया। युवक ने उस वृद्ध को धन्यवाद दिया। वृद्ध ने कहा, 'मुझे धन्यवाद देने का समय अभी नहीं आया है। मैं धन्यवाद की प्रतीक्षा करूंगा।'

तीस साल तक वह रेगिस्तानों में, जंगलों में, पहाड़ों में गुरु की तलाश करता रहा, पर वे कसौटियां कभी भी पूरी न हो सकीं। थक कर, पूरी तरह से निराश होकर वह अपने गांव वापस लौटा। अब वह जवान न था। जब वह घर छोड़ कर गया था, उसकी आयु तीस वर्ष के लगभग थी। अब वह करीब

साठ वर्ष का हो गया था। पर जैसे ही वह अपने गृहनगर में प्रवेश करने को था, उसने उसी वृद्ध को वृक्ष के नीचे बैठा हुआ देखा। वह अपनी आंखों पर विश्वास ही न कर सका। उसने कहा, 'हे भगवान, इसी आदमी का तो उसने वर्णन किया था। उसने यह तक कहा था कि वह नब्बे साल का होगा... यही तो वह वृद्ध है। मैं कितना बेहोश रहा होऊंगा कि मैंने उस वृक्ष को भी नहीं देखा, जिसके नीचे वह बैठा हुआ था। और वह सुगंध, जिसका उसने जिक्र किया था। वह दीप्ति, वह उपस्थिति, वह उसके चारों ओर की जीवंतता...' वह उसके पैरों पर गिर पड़ा और उसने कहा, 'यह कैसा मजाक है ?' तीस साल तक मैं भटकता रहा और आप सब जानते थे।' उस वृद्ध आदमी ने कहा, 'मेरे जानने से क्या अंतर पड़ता है। सवाल यह है कि क्या तुम जानते थे ? मैंने तो इसका एकदम ठीक-ठीक वर्णन कर दिया था, पर फिर भी भटकना पड़ा। केवल इस तीस साल के संघर्ष के बाद ही तुममें थोड़ा-सा होश आया है। उस दिन तुमने मुझे धन्यवाद देना चाहा था और मैंने तुमसे कहा था कि अभी समय नहीं आया है, एक दिन समय आएगा। तुम उसी दिन मुझे चुन सकते थे, लेकिन तुम्हारा भी दोष नहीं, तुम्हारे पास वे आंखें ही न थीं। तुमने मेरे शब्द तो सुने, पर तुम उनका अर्थ न समझ सके। मैं तुम्हारे सामने अपना ही वर्णन कर रहा था, पर तुम मेरी खोज कहीं और करने की सोच रहे थे।'

शिष्य गुरु को केवल संयोग से ही पाता है, वह चलता है, गिरता है, फिर-फिर उठ कर खड़ा होता है। धीरे-धीरे थोड़ी-थोड़ी जागरुकता उसमें आती जाती है। जहां तक गुरु का संबंध है, वह कुछ विशेष लोगों की होशपूर्वक प्रतीक्षा कर रहा होता है। वह उन लोगों तक पहुंचने का हरसंभव प्रयत्न भी करता है, लेकिन कठिनाई यह है कि वे सभी बेहोश हैं। गुरु तुम्हें अस्तित्व देता है, ज्ञान नहीं। वह तुम्हारे अस्तित्व को, तुम्हारे जीवन को अधिक विस्तृत करता है, लेकिन ज्ञान को नहीं। वह तुम्हें एक बीज देता है... और तुम भूमि बन कर उस बीज को अंकुरित होने, पनपने व खिलने दे सकते हो।

पाठकों से -

कोविड-19 के चलते लॉकडाउन में 'प्रत्यूष' के माह अप्रेल व मई के अंक प्रकाशित नहीं किए जा सके। आपके हाथों में पहुंचा यह माह जून-जुलाई-2020 का संयुक्तांक है। पिछले तीन माह तक आपको 'प्रत्यूष' से दूर रहना पड़ा इसका हमें खेद है। आपका स्नेह व सहयोग पूर्ववत् बना रहेगा। इसी अपेक्षा के साथ आपके व परिवार के आरोग्य रहने की कामना करते हैं।

- प्रबंधक

With Best Compliments

BALAJI KRIPA MARBLE & GRANITE PVT. LTD.

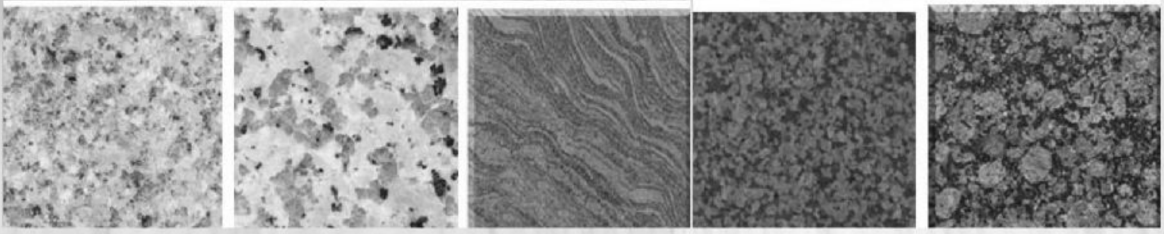

ALL KINDS OF MARBLE AND GRANITE BLOCK, SLABS & TILES.

398-399, Sukher Industrial Area, Sukher, Udaipur (Rajasthan) INDIA

Phone : +91-294-2442370, Fax : +91-294-2441773

e-mail : balajikripa-udr@gmail.com

सावन आया भागिए नहीं भीगिए

✍ नरेश मेहता

श्रावण में वन, उपवन और जलाशयों के किनारे गोठें होती हैं, वैष्णव मंदिरों की हवेलियों के परकोटों से निकलकर ठाकुरजी वन-विहार के लिए ताम-झाम के साथ निकल पड़ते हैं.... स्त्रियां हैं कि वर्षा की थोड़ी सी रिमझिम हुई और निकल पड़ती हैं। गांव के बाहर जिस आम, पीपल या नीम की शाखा थोड़ी नीचे झुकी हुई, उसी पर रस्सी का झूला डाला और लेने लगी हिचकोले.... फुहारों से छनती आती श्रावणी पवन पोर-पोर को ऐसे सजग बना देती है, मानो रोम-रोम जिव्हा हो गए हैं।

मनुष्य की रचना प्रकृति ने उसके 'स्व' के लिए की ही नहीं है। वह तो सृष्टि मात्र के प्रतिनिधित्व के लिए जन्मा है। तभी तो मनुष्य आषाढ़ पर किसी प्रकार प्रतीक्षा करता है कि थोड़ी-सी वर्षा हो, तो नदी-नाले चलने लगें, हवा में थोड़ी ठंडक आ जाए, वृक्षों की वानस्पतिक उपस्थिति अनुभव होने लगे और ऐसी भावनता श्रावण आते-आते बहुत कुछ हो भी जाती है। जिस खिड़की से कभी लू की लपटें आती थीं, अब उसी से ठंडी बयार के झोंके रह-रहकर आने लगते हैं।

इस बीच वृक्षों के पत्ते नहा लिए, तो कैसी हरीतिमा आ गई न! मेघगर्जन पर ऐसा लगता है कि जैसे खंभों पर जलती चिमनियां चौंकम-चौंक पड़ रही हैं। घर-आंगन, सभी जगह कैसा सुहावना लगने लगता है, जैसे कोई मेहमान आने को है और अभी तक सतरंजी भी बाहर ओटले(चबूतरे) पर किसी ने नहीं बिछाई। भला ऐसी रम्य, काम्य ऋतु में समस्त सृष्टि की ओर से मनुष्य को कोई उत्सव मनाने से रोक सकता है? गोठों के लिए श्रावणी फुहार में भीगे हुए सुदूर वनों के जलाशयों तक जाने से कोई रोक सकता है?

आनंद के लिए उपकरण की नहीं, मन की उत्सवता चाहिए। जंगल में पीपल या वट-वृक्ष के भीगे तने से पीठ टिकाए वर्षा में टाट सिर से ओढ़े, ठंडी हवा में कांपते किसी ग्वाले, घोष से पूछिए कि तेज सपाटे मारती हवा में छितरी पड़ती बंशी की बेसुरी तान में क्या आनंद आ रहा है! वर्षा की माधवता जब अपने अंतर में संपन्न होगी, तभी तो वर्षोत्सव अनुभव किया जा सकता है।

गीली, भीगी गोधूली में गाय-भैंसों के साथ लौटना भी एक उत्सव है, यह अनुभव करने के लिए अपने अंतर में अनासक्त चरमोत्कर्ष चाहिए।

स्त्रियां हैं कि वर्षा थोड़ी-सी रिमझिम हुई और निकल पड़ीं। गांव के बाहर जिस आम, पीपल या नीम की शाखा थोड़ी नीचे हुई, उसी पर रस्सी का झूला डाला और हिचकोले लेने लगीं और कहीं दो-चार हुईं, तो रस्सी में पटिया फंसाया और दोनों ओर सखियां खड़ी हो गईं। कैसे हुमस-हुमसकर पेंगे बढ़ाई जा रही हैं। बाल हवा के साथ छितरे पड़ रहे हैं। पल्लू का पता ही नहीं चल रहा है। रिमझिम में मुंह पर कैसा छींटा पड़ रहा है, जैसे कोई दूध की धार मुंह पर छींट रहा हो। झूले के साथ देह और देह के साथ हीरामन मन भी कैसे नीचे-ऊपर आ-जा रहा है। जल को ठेलने की तरह ही हवा को भी ठेलते हुए ऊपर जाते समय सीने पर कैसा मीठा-मीठा सा दबाव लगता है, जैसे किसी का हाथ हो- किसका ? परन्तु लौटते में पैरों के बीच से उड़ते लुगड़े के बीच की हवा कैसी ठंडी-ठँडी सी, पिंडलियों को, जांघों को थरथरा देती है। कमर तक सब सुन्न सा पड़ जाता है, जैसे रस्सी नहीं थामो, तो बस अभी चू ही पड़ेंगे। और इस उब-चुभ में मन का रसिया हीरामन न जाने कितने नदी-नाले, गांव-कांकड़ संबंधों के औचित्य-अनौचित्य को लांघकर ऐसे-ऐसे सपने देखने लगता है कि किसी को उनकी जरा सी भनक या आहट भी हो जाए, तो फिर कुएं में ही फांदना पड़े। गीत की एक हिलोर ऊपर से नीचे को आती है और फिर हवा के दबाव में थरथराती ऊपर चली जाती है - चालो रे गामड़े मालवे!!! झूले की यह उपकरणहीन मन की उत्सवता अर्द्धचंद्राकार स्थिति में आती है, फिर ऊपर आकाश में फिर कैसे पलटती है।

ऐसी उत्सवता में वन-प्रांतर, नदी-नाले, वनराजियां, पशु-पक्षी, सभी नारी कंठ की इस आकुल रसमयता में अभिषेकित हो जाते हैं। मनुष्य की यह कैसी उत्सव-सुगंध है, जिससे समय की देह भी सुवासित लगती है। श्रावण में अरण्य की भांति आकंठ भीगना और क्या होता है ? और श्रावण बीतते न बीतते श्रावण पूर्णिमा आ जाती है। तीज के लिए पीहर आई नवबधुएं पुनः लड़कियां बनी कैसे दुईपाटी के फूल लगती हैं। श्रावण पूर्णिमा के रक्षाबंधन के बाद वे फिर ससुराल लौट जाती हैं। अपने गांव के साथ कन्यात्व कैसा बांधा हुआ है, बाकी कहीं जाओ, बधू तो होना ही है। श्रावण फुहारों का मास है, परंतु भाद्रपद तो झड़ी के लिए ऐसा प्रसिद्ध है कि जैसे सखाराम बुआ की कथा, जिसे सुनते हुए डूबते जाओ। श्रावण में उपवनों, जलाशयों के किनारे गोठें होती हैं। वैष्णव मंदिरों की हवेलियों के परकोटों से निकलकर ठाकुरजी भी वन-विहार के लिए ताम-झाम से निकल पड़ते हैं। भगवान का या मनुष्य का, किसी का वन विहार के लिए निकलना ही उत्सव है। ठीक ही तो है, श्रावण की वर्षा, वर्षा थोड़े ही होती है, वह तो नेत्रों से देखे जाने का माधव स्पर्श होती है। श्रावण की वर्षा मिथुन-नयनों की ऐसी भाषा होती है, जो आंखों की राह सीधे अंतर को संबोधित करती है और मन में घंटियां टुनटुनाने लगती हैं। ऐस में नयन मिलते कहां हैं ? पलकें तत्काल इन्हें न ढांपें, तो न जाने क्या हो जाए ?

फुहारों से छनती आती श्रावणी जंगली हवा पोर-पोर को ऐसे सजग बना देती है, जैसे सारे रोम जिह्वा हो गए हैं। नारी-देह की इस उत्सव-भाषा को आज तक न जिह्वा मिल पाई और न अभिव्यक्ति ही... मन के साथ इस तन को भी भीगने दो। वृक्षों की भांति अपनी देह को भी भीगने देने की उन्मुक्तता, आनंद और सुख कितना अप्रतिम होता है, यह किसी श्रावणी सोमवार के वन-विहार के दिन बहू बनकर ही अनुभव किया जा सकता है।

(लोकभारती से प्रकाशित ज्ञानपीठ विजेता स्वर्गीय साहित्यकार के 'उत्तरकथा' से)

गूंजते हैं - 'बोल बम' के उत्साहित स्वर

यूं तो आमतौर पर शिव भक्त सावन का महीना शुरु होते ही गंगा नदी की तरफ चल पड़ते हैं और इसका पवित्र जल लाकर भगवान शिव पर चढ़ाते हैं। लेकिन जिन क्षेत्रों से गंगा नदी बहुत दूर होती है, वहां दूसरी पवित्र नदियों का जल लाकर भी भगवान शिव पर चढ़ाया जाता है। पश्चिम और दक्षिण भारत में भी अब कांवड़ की परम्परा शुरु हो चुकी है। नासिक के पास स्थित त्रयंबकेश्वरम् में भगवान त्रयंबकेश्वर यानी शिव को गोदावरी नदी के पवित्र जल से अभिषेक कराया जाता है। इसी तरह दक्षिण भारत में कृष्णा-कावेरी नदियों के जल से भी भगवान शिव का जलाभिषेक होता है।

लेकिन मूलतः कांवड़ की धार्मिक और सांस्कृतिक यात्रा उत्तर भारत की जीवन परम्परा का हिस्सा है। हरिद्वार और ऋषिकेश से इन दिनों जल लाकर शिव भक्त पूरे देश में शिव मंदिरों में जाते हैं। जिस कारण पश्चिमी उत्तरप्रदेश, दिल्ली और उत्तरांचल का एक बड़ा हिस्सा सावन में कावड़ यात्राओं से सराबोर हो जाता है। अगर माइथोलॉजी पर जाएं तो माना जाता है कि रावण, परशुराम और भगवान राम दुनिया के पहले कांवड़िये थे, जिन्होंने नदियों से पवित्र जल लाकर भगवान शिव का जलाभिषेक किया था। जहां तक इसके पीछे किसी धार्मिक कहानी की बात है तो पौराणिक काल में जब देवताओं और दैत्यों ने मिलकर समुद्र मंथन किया था तो उस समुद्र मंथन से 14 रत्न निकले थे, इन रत्नों में एक हलाहल विष भी था, जिसे देवताओं की अनुनय विनय पर भगवान शिव ने पी लिया था।

कहा जाता है जब भगवान शिव ने वह जहर पीया तो वह इतना ज्यादा तीखा था कि उसे पीते ही उनका पूरा गला नीला पड़ गया। इसीलिए उनका एक नाम नीलकंठ भी है। भगवान शिव के शरीर में इस दहकती हुई गर्मी को कम करने के लिए देवताओं ने उन पर जल की बारिश की। इसी तरह उनके भक्तों ने भी उनका जलाभिषेक किया। तब से ही पूरे सावन के महीने में भगवान शिव का जलाभिषेक होता है। पूरे देश की पवित्र नदियों से जल लाकर उन पर चढ़ाया जाता है ताकि प्रतीक तौर पर ही सही उनके शरीर की गर्मी खत्म हो जाए। यह जलाभिषेक पूरे सावन माह होता है।

- आर. सी. शर्मा

With Best Compliments
नीलकण्ठ
फर्टिलिटी एण्ड वुमन केयर सेन्टर
डॉ. आशिष सूद
सलाहकार इंटेंसिविस्ट और एनेस्थेटिस्ट
टॉल फ्री नं. : 1800 30020 190
वर्तमान / पूर्व रोगी : +91-97846.00614
अपोईन्टमेन्ट : 0294-6530105, 2442595
Neelkanthfertility@gmail.com
www.Neelkanthivfcentre.com
10-11, स्वामी नगर, डॉक्टर्स लेन, RSEB ऑफिस के पास,
सेलिब्रेशन मॉल के पीछे, भुवाणा, उदयपुर (राज.)
http://www.facebook.com/NeelkanthfertilityHosital
https://www.youtube.com/UCOin3codfuZjYyPWTVAob8w

छैयां-छैयां गर्ल मलाइका अरोड़ा

✍ शिवनिका

फिल्म 'दिल से' में गीत 'छैयां-छैयां' पर दिलकश मुद्राओं में डांस से दर्शकों को अपने साथ नाचने पर मज़बूर कर देने से सुर्खियों में आई मलाइका अरोड़ा को टीवी पर बड़े दिनों के बाद 'इण्डियाज़ बेस्ट डान्स' रियलटी शो में बतौर जज देखा गया। हालांकि ये फिल्मों में बतौर नायिका कभी नज़र नहीं आईं लेकिन डान्स के क्षेत्र में उनके योगदान से उनका कद किसी नामचीन हीरोइन से कम भी नहीं है।

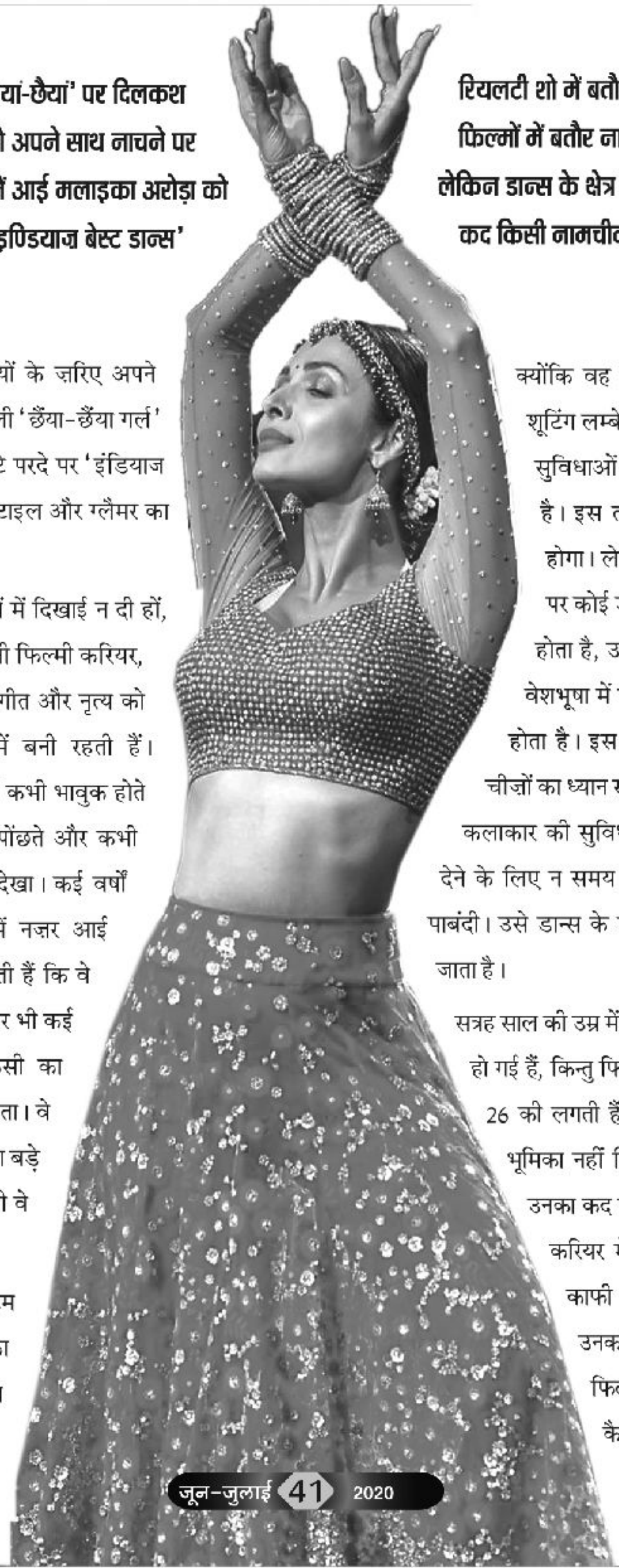

अपने करियर में कुछ यादगार नृत्यों के ज़रिए अपने फैन्स के दिलों में जगह बनाने वाली 'छैंया-छैंया गर्ल' यानी मलाइका अरोड़ा पिछले दिनों छोटे परदे पर 'इंडियाज बेस्ट डान्स' में बतौर जज अपनी हॉट स्टाइल और ग्लैमर का तड़का लगाती नज़र आई थीं

मलाइका भले ही लम्बे समय से फिल्मों में दिखाई न दी हों, फिर भी जलवा कायम है। कभी वे अपनी फिल्मी करियर, कभी फिटनेस तो कभी मौजूदा गीत-संगीत और नृत्य को लेकर अपनी राय के साथ खबरों में बनी रहती हैं। 'इन्डियाज बेस्ट डांस' में दर्शकों ने उन्हें कभी भावुक होते तो कभी आंखों की कोर से नमी को पोंछते और कभी ठहाके के अपने अलग ही अन्दाज में देखा। कई वर्षों बाद डान्स के किसी रियलिटी शो में नज़र आई मलाइका इस बात को स्वीकार भी करती हैं कि वे बहुत भावुक हैं और छोटी-छोटी बातों पर भी कई बार रो पड़ती हैं। उन्हें मंच पर किसी का असफल होकर लौटना अच्छा नहीं लगता। वे किसी को दुखी नहीं देख सकती। छोटे या बड़े परदे की बात नहीं, असल ज़िन्दगी में भी वे ऐसी ही हैं।

फिल्मों में डांस और सुपरहिट आइटम नम्बर करने के सवाल पर मलाइका का कहना है कि - फिल्मों में जो डांस होता है, वह असल में डांस होता ही नहीं है, क्योंकि वह टुकड़ों में फिल्माया जाता है। उसकी शूटिंग लम्बे समय तक चलती है और शूट के दौरान सुविधाओं और परिवेश का पूरा खयाल रखा जाता है। इस तरह के डांस को तो बेहतर कहना ही होगा। लेकिन जब लाइव(सीधा प्रसारण) टीवी पर कोई डांस होता है तो वहां एक निर्धारित समय होता है, उसी में आपको लय, ताल और साधारण वेशभूषा में पूरे एक्सप्रेशन के साथ अपना बेस्ट देना होता है। इस दौरान कैमरा से लेकर कई तकनीकी चीज़ों का ध्यान रखना होता है, जबकि फिल्मांकन में सब कलाकार की सुविधानुसार सेट होता है। उसे अपना बेस्ट देने के लिए न समय की सीमा होती है और न कोई दूसरी पाबंदी। उसे डान्स के हर टुकड़े पर पेशेवर निर्देशन भी मिल जाता है।

सत्रह साल की उम्र में फिल्म इण्डस्ट्री से जुड़ी मलाइका 46 की हो गई हैं, किन्तु फिटनेस इतनी गजब की है कि वे आज भी 26 की लगती हैं। उन्होंने फिल्मों में कभी बतौर हीरोइन भूमिका नहीं निभाई, लेकिन उनके डान्स के जलवे ने उनका कद हीरोइन से कम भी नहीं होने दिया। अपने करियर में उन्होंने कई ऐसे डान्स भी किए, जो काफी जोखिम भरे थे, लेकिन 'छैयां-छैयां' उनका ऐसा नृत्य था, जो चलती ट्रेन की छत पर फिल्माया गया था। इस जोखिम को शब्दों में कैसे बयां किया जा सकता है।

थाली की सहेली चटपटी चटनी

भोजन का स्वाद चटनी से बढ़ जाता है। अच्छी बात यह है कि स्वास्थ्य की दृष्टि से भी ये लाभदायक है। खासकर फलाहारी चटनी तो बहुत ही चटपटी और स्वादिष्ट होती है। इसे साबूदाना या फिर सावे की खिचड़ी के साथ भी खा सकते हैं। इस चटनी से खिचड़ी का स्वाद दुगुना बढ़ जाता है। ये पौष्टिक भी होती हैं। आपके लिए इस बार गायत्री डांगी बता रही हैं, ऐसी ही कुछ स्वादिष्ट, चटपटी और पौष्टिक चटनियों की विधियों की विधि।

सामग्री : ताजा नारियल-1 कप(कद्दूकस किया हुआ), हरा धनिया 2 चम्मच, हरी मिर्च 2, आधा नींबू, सेंधा नमक स्वादानुसार।

विधि : नारियल की चटनी बनाने के लिए मिक्सर जार में कद्दूकस किया हुआ नारियल डाल दें। इसमें हरी मिर्च को मोटा-मोटा काटकर डाल दें। साथ ही हरा धनिया और नींबू निचोड़कर रस और 2 से 3 चम्मच पानी भी डाल दें। चटनी को बिल्कुल बारीक पीसकर तैयार कर लें। नारियल की चटनी तैयार है, इसे प्याली में निकाल लें।

सामग्री : 2 कटोरी इमली का गुदा, 2 कटोरी गुड़, आधा चम्मच लाल मिर्च, आधा चम्मच जीरा (भुना हुआ), सेंधा नमक स्वादानुसार।

विधि : इमली के गुदे को पानी में 1 घंटे केलिए भिगोकर रख दीजिए। घंटे भर बाद गुदे को छान लें। अब इसे गुड़ के साथ उबाल लें और थोड़ा गाढ़ा होने पर इसमें लाल मिर्च और सेंधा नमक अच्छी तरह मिला दें। तैयार है आपके लिए इमली की चटनी।

सामग्री : 1 कच्चा आम, आधा कप हरा धनिया, एक चौथाई जीरा पाउडर, 2-3 हरी मर्च, सेंधा नमक स्वादानुसार।

विधि : विधि : कच्चे आम को धो कर छील लें। उसके अन्दर से गुठली निकाल लें। अब मिक्सी में कच्चे आम का गुदा, हीरा धनिया, जीरा पाउडर, हरी मिर्च, सेंधा नमक और आधा कप पानी डालकर दो मिनट मिक्सर चलायें। लीजिए आपकी आम की चटनी तैयार हो गई। आप इसे कुट्टु की पकौड़ी या और किसी दूसरे व्यंजन के साथ भी खा सकते हैं।

सामग्री : 100 ग्राम मूंगफली दाने, आधा चम्मच जीरा, आधा चम्मच लाल मिर्च, सेंधा नमक स्वादानुसार, सूखा हरा धनिया या पुदीना थोड़ा-सा।

विधि : विधि : मूंगफली के दाने को धीमी आंच पर सेक लें। ठंडे होने के पश्चात् छिलके उतार लें। अब मिक्सी में दाने, लाल मिर्च, नमक, जीरा व हरा धनिया या पुदीना डालकर पीस लें। तैयार फलाहारी चटनी को सिंघाड़े की पूड़ी या राजगिरे के पराठे के साथ परोसें और भोजन का आनन्द उठाएं।

सामग्री : सामग्री : हरा धनिया 100 ग्राम, नींबू आधा, सेन्धा नमक स्वादानुसार, भुने जीरे का पाउडर आधा छोटी चम्मच, पुदीना 20 से 25, हरी मिर्च 2

विधि : हरे धनिये की मोटी डंडियां हटाकर पानी से धो लें और पानी सूखने के बाद मोटा-मोटा काट लीजिए। हरी मिर्च भी मोटी-मोटी काट लें। मिक्सर जार में कटे हुए हरे धनिये, हरी मिर्च और पुदीना डाल दीजिए। इसमें सेंधा नमक, भुना जीरा पाउडर और थोड़ा-सा पानी डाल लें तथा चटनी को एकदम बारीक पीस लें। इसके बाद, चटनी में नींबू का रस निचोड़ें और एक बार फिर से मिक्स कर लें। चटनी को प्याले में निकाल लें। स्वाद में बेहतरीन हरे धनिये की चटनी तैयार है।

मातृत्व

स्मार्टफोन के जरिए गर्भनाल की निगरानी

गर्भवती मां और बच्चे का हाल बताएगा सॉफ्टवेयर

स्मार्टफोन में सॉफ्टवेयर के जरिए बच्चे की गर्भनाल यानी प्लेसेंटा को स्कैन करके मां और उसके बच्चे की सेहत के बारे में पता लगाया जा सकेगा। एक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के जरिए एक डिजिटल टूल तैयार किया गया है। शोधकर्ताओं का कहना है कि गर्भनाल के जरिए मां और बच्चे के बारे में तमाम संवेदनशील सूचनाएं मिल सकती हैं। इस संबंध में एक शोध अर्जेंटिना के ब्यूनस आयर्स में इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ प्लेसेंटा एसोसिएशन की बैठक में पेश किया गया।

मां और बच्चे की सही देखभाल : न्यूट्रिशनल साइंसेज के अलीसन गरनैंड के अनुसार जहां पर संसाधन कम हैं या किसी के पास स्मार्टफोन नहीं है, वहां कोई प्रशिक्षित मेडिकल प्रोफेशनल फोटो खींचे, जिसका इस सॉफ्टवेयर के जरिए विश्लेषण किया जाए। इससे फौरन सूचना मिल जाएगी और उसके जरिए मां और बच्चे की सही देखभाल हो सकेगी।

गर्भावस्था के दौरान अहम भूमिका निभाती है गर्भनाल : दरअसल, गर्भनाल मां और बच्चे की सेहत के बारे में बेहद जरूरी जानकारी मुहैया कराने में सक्षम है, लेकिन इसकी जांच में लगने वाला समय, विशेषज्ञता और खर्च इतना ज्यादा है कि इसका इस्तेमाल नहीं हो पाता। अलीसन गरनैंड कहते हैं, बच्चे और मां के लिए गर्भनाल ही गर्भावस्था के दौरान सबकुछ करती है। बच्चे को ऑक्सीजन पहुंचाने से लेकर पोषण पहुंचाने तक का काम गर्भनाल ही करती है। लेकिन, दुनियाभर में करीब 95 प्रतिशत प्रसव में गर्भनाल से जुड़ा डाटा जुटाया ही नहीं जाता।

गर्भनाल की भूमिका

गर्भनाल महिला के ही शरीर का अभिन्न अंग है, जो गर्भावस्था के दौरान बच्चे को सुरक्षा और पोषण देने का काम करती है। बच्चा इसी के सहारे मां के गर्भ में जीवित रहता है। गर्भवती महिला इसी नाल के माध्यम से ही अपने बच्चे से जुड़ी होती है। गर्भनाल ही बच्चे के विकास को प्रेरित करती है। यह सुरक्षा के साथ-साथ पोषण देने का भी काम करती है। यह बच्चे को कई तरह के संक्रमण से सुरक्षित रखने का काम करती है।

अभी तक नहीं मिला पेटेंट : अभी तक इस तकनीक का पेटेंट नहीं मिला है। शोधकर्ताओं ने बताया कि इसके तहत प्रसव के बाद गर्भनाल की हर तरफ का आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के जरिए विश्लेषण किया जाता है। इसके बाद उन नाजुक सूचनाओं की रिपोर्ट तैयार की जाती है जो उस मां और बच्चे की सेहत पर असर डाल सकती है। जैसे कि गर्भ में भ्रूण को पूरा ऑक्सीजन मिल रहा है या नहीं, कहीं संक्रमण या रक्त स्राव का खतरा तो नहीं है।

कैसा रहेगा आपके लिए यह माह?

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

यह माह आपके लिए सामान्य प्रतीत होता है, खर्च में वृद्धि और कर्म क्षेत्र में अड़चनें पैदा होंगी। नौकरीपेशा अपने को असहज महसूस करेंगे, भाग्य रूठा सा रहेगा। कड़े पुरुषार्थ से ही अपने को स्थापित कर पायेंगे। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, पैतृक मामले सुलझेंगे।

वृषभ

माह का पूर्वार्द्ध सामान्य है जबकि उत्तरार्द्ध श्रेष्ठ परिणाम देने वाला होगा। रचनात्मक कार्यों से नया कुछ कर पायेंगे, भाग्य साथ देगा, साझेदारी लाभ दिलायेगी, स्वास्थ्य उत्तम, जीवन साथी का भरपूर सहयोग मिलेगा।

मिथुन

परेशानियां दूर होंगी, असमंजस की स्थिति रहेगी, किसी की अप्रासंगिक सलाह हानि पहुंचा सकती है, स्थिर मन से किया गया कार्य फलदायी होगा। कार्य क्षेत्र सुदृढ़ बनेगा, परिवार में मंगलकार्य संभव, किसी संस्था या सरकार द्वारा सम्मान होगा।

कर्क

आय पक्ष प्रबल है, इसका भरपूर लाभ उठाएं। कार्य क्षेत्र में नवीनता आयेगी, एवं मन के अनुसार कार्य सम्पादित होंगे। सामुदायिक कार्यों में सफलता मिलेगी, शत्रु पक्ष हावी होने की कोशिश करेंगे, प्रत्येक कदम सावधानीपूर्वक उठाएं, स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

सिंह

बुद्धि एवं विवेक के बल से पराक्रम में वृद्धि और अकस्मात धन लाभ के योग बनेंगे। राजकीय सेवा के प्रयासरत जातकों की इच्छा पूरी होगी। शत्रु पक्ष पराजित होगा, लम्बी बीमारी से निजात मिल सकती है, वाक्पटुता से राजनीति के क्षेत्र में पहचान बनाएंगे।

कन्या

समय पक्ष में बन रहा, प्रारम्भिक बाधाओं के बाद पूर्ण सफलता के योग बनेंगे, निरन्तरता बनाये रखें, भाग्य पूर्ण रूप से साथ देगा, अपने अधीनस्थों का विश्वास जीतें, जीवन स्तर में सुधार होगा, पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति भी सम्भव।

तुला

माह का पूर्वार्द्ध पूर्ण फलदायी होगा, दृढ़तापूर्वक पुरुषार्थ करें। सकारात्मक परिणाम आपको प्रफुल्लित करेगा, आय पक्ष उत्तम, स्थाई सम्पत्ति में वृद्धि सम्भव, नये मित्रों का सहयोग रहेगा, आपका भरपूर सहयोग करेंगे।

प्रमुख उत्सव

दिनांक	तिथि	पर्व/त्योहार
5 जुलाई	आषाढ़ शुक्ला 15	गुरु पूर्णिमा
14 जुलाई	श्रावण कृष्णा 9	गुरु हरकिशन जयंती
15 जुलाई	श्रावण कृष्णा 10	श्रीनाथजी हांडी उत्सव
20 जुलाई	श्रावण कृष्णा 30	सोमवती हरियाली अमावस्या
23 जुलाई	श्रावण शुक्ला 3	मधुश्रवा हरियाली तीज
27 जुलाई	श्रावण शुक्ला 7-8	गो. तुलसीदास जयंती

वृश्चिक

माह का पूर्वार्द्ध सुकून देगा। व्यापार में वृद्धि के संकेत, भाई-बहिन का सहयोग व भागीदारी लाभप्रद सिद्ध हो सकती है। वाहन सावधानीपूर्वक चलाएं, अनैतिक धन एवं कार्यों में रूचि लेने से बचें। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

धनु

मनोविकार से ग्रसित हो सकते हैं, किसी ठोस निर्णय में पहुंचने में कठिनाई होगी, किसी नए कार्य को टालने में अनुकूलता रहेगी, किसी का भी सहयोग प्राप्त नहीं हो पायेगा, अपने ही आपके विरोधी बनेंगे। कर्म क्षेत्र में बाधाएं सम्भव हैं। पैतृक मामले पक्ष में रहेंगे। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

मकर

ठोस निर्णय लेने की स्थिति में होंगे, खर्चों की अधिकता रहेगी, आय पक्ष सामान्य रहेगा, संतान पक्ष हर्षोल्लासित करेगा, स्थायित्व कार्यों में अधिक परिश्रम अनुकूल रहेगा, विवेक शक्ति से सार्वजनिक क्षेत्र में अपना पराक्रम दिखायेंगे, दैवीय शक्ति पूर्ण सहयोगी करेगी।

कुम्भ

घर में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। आय के नये स्रोत बनेंगे एवं आय में वृद्धि के साथ खर्चे भी बढ़ेंगे। दूर की यात्रा सम्भव है, मुकदमे एवं न्यायिक कार्य पक्ष में रहेंगे। सट्टा, लॉटरी आदि कार्यों से दूर रहें, पुराने मित्रों से भेंट हो सकती है, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

मीन

वर्तमान स्थान या कार्य क्षेत्र परिवर्तन का अनुकूल समय है। दृढ़तापूर्वक कार्यों में लगे रहें, परिवर्तन का मौजूदा व्यवस्थाओं पर आंशिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है, परन्तु आगे लाभदायी सिद्ध होगा, भाग्य और जीवन साथी के सहयोग से नया कार्य सम्पादित करेंगे।

JASBIRSINGH
M.: 094141 57853

RANJITSINGH
M. : 094623 02841

CHIRAG PETRO PRODUCT

SALES CORPORATION

Trading of Bitumen (Bulk & Drum)
Bituminous Products
and Other Petroleum Products

17-18, Maharana Udaisingh
Market, Udaipur (Raj.)
E-mail: chiragpetro@gmail.com

महिला समृद्धि बैंक ने मनाई रजत जयंती

उदयपुर। दी उदयपुर महिला समृद्धि अरबन को-ऑपरेटिव बैंक की स्थापना के 25 वर्ष पूरे होने पर पिछले दिनों रजत जयंती मनाई गई। मुख्य अतिथि बैंक की पूर्व अध्यक्ष डॉ. किरण जैन थीं। बैंक अध्यक्ष विद्याकिरण अग्रवाल ने बताया कि बैंक ने वर्षभर हिस्सा धारकों, नागरिकों एवं ग्राहकों हेतु कई कार्यक्रम आयोजित किए, जिनमें रक्तदान, नि:शुल्क चिकित्सा शिविर आदि हैं।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी विनोद चपलोत ने बताया कि डॉ. किरण जैन ने बैंक की नई ऋण योजनाओं का शुभारम्भ किया। बैंक ने व्यापारियों के लिए उनके ऋण का 20 प्रतिशत तक नया ऋण देने की योजना बनाई है। जिसमें ग्राहकों द्वारा समय पर भुगतान किए जाने पर 2 प्रतिशत ब्याज दर में सब्सिडी दी जाएगी। व्यापारी को यह ऋण 8 प्रतिशत की दर से भुगतान करना होगा। छोटे व्यापारियों, रेहड़ी, वालों एवं सब्जी

व्यापारियों हेतु भी लघु ऋण योजना का शुभारम्भ किया गया।

बैंक उपाध्यक्ष सुनिता मांडावत ने बताया कि बैंक द्वारा कोविड-19 ऋण पैकेज के अन्तर्गत दिए जाने वाले ऋण पर प्रोसेसिंग शुल्क शून्य कर दिया गया।

अजय चेयरपर्सन नियुक्त

उदयपुर। राजस्थान कयाकिंग केनोईंग संघ द्वारा ड्रेगन बोट खेल को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए भारतीय कयाकिंग संघ की राष्ट्रीय वेबिनार के दौरान उदयपुर के अजय अग्रवाल को राजस्थान ड्रेगन बोट का चेयरपर्सन नियुक्त किया गया। भारतीय कयाकिंग संघ के संरक्षक बलवीर सिंह कुशवाह ने हाल में उदयपुर में हुई अखिल भारतीय अन्तर विश्वविद्यालयी कयाकिंग केनोईंग प्रतियोगिता के दौरान राजस्थान के खिलाड़ियों के लिए अन्तरराष्ट्रीय मापदंडों वाली एक 10 सीटर ड्रेगन बोट 4 लाख की नि:शुल्क भेंट की थी।

बी एल गौड़ बने उपाध्यक्ष

उदयपुर। समाजसेवी एवं ट्रांसपोर्टर भंवरलाल गौड़ को सार्क साउथ एशिया के देशों में व्यापार, उद्योग और अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए स्थापित एक व्यापार निकाय साउथ इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज(एसएसीसीआई) के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया है। गौड़ उदयपुर निवासी समाजसेवी एवं ट्रांसपोर्ट व्यवसायी लक्ष्मीनारायण गौड़ के पुत्र हैं। साउथ एशियन चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज भारत के अलावा नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, श्रीलंका, अफगानिस्तान, पाकिस्तान एवं मालदीव में छोटी और मध्यम इकाइयों के विकास के लिए काम करते हुए लघु उद्यमियों को सहयोग करता है।

डॉ. कोठारी राज्यपाल के प्रतिनिधि मनोनीत

उदयपुर। राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर के पूर्व अध्यक्ष डॉ. देव कोठारी को हरिदेव जोशी पत्रकारिता एवं मास कम्युनिकेशन विश्वविद्यालय, जयपुर की सलाहकार समिति में राज्यपाल कलराज मिश्र के प्रतिनिधि के रूप में मनोनीत किया गया है।

भीण्डर में खुला मारुति शोरूम

भीण्डर। मारुति सुजुकी एवं टेक्नॉय इंडिया प्रा. लि. के मारुति के नए शोरूम का उद्घाटन उदयपुर जिले के भीण्डर तहसील मुख्यालय पर किया गया। टेक्नॉय मोटर्स के दिनेश जैन ने बताया कि शोरूम आधुनिक व नवीन तकनीक आधारित है, जहां उपभोक्ताओं के लिए नई गाड़ियों का प्रदर्शन उपलब्ध रहेगा। उद्घाटन के दिन 3 नई गाड़ियों की डिलीवरी की गई व 15 गाड़ियों की सर्विसिंग भी की गई।

सिखवाल उपाध्यक्ष

उदयपुर। विप्र फाउण्डेशन ने राजस्थान प्रदेश जोन-1ए के अध्यक्ष के. के. शर्मा के निर्देशानुसार राधेश्याम सिखवाल को वरिष्ठ प्रदेश उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया। सत्यनारायण पालीवाल को कोषाध्यक्ष बनाया गया है।

डॉ. विक्रम चेयरमैन नियुक्त

उदयपुर। हेल्प इंडिया ऑनलाइन संस्थान के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. श्रीधर पारीक ने डॉ. विक्रम मेनारिया को प्रीवेंटिव हेल्थ विंग में चेयरमैन पद पर नियुक्त किया है।

मांडोत को स्टार-2020 सर्टिफिकेट

उदयपुर। वर्ल्ड बुक ऑफ रिकाईर्स लंदन ने समाजसेवी अरुण मांडोत को 15 वर्ष से किए जा रहे सेवा कार्यों पर स्टार-2020 सर्टिफिकेट से सम्मानित किया है। मांडोत जेएसजी मेवाड़ रीजन के महामंत्री हैं।

लॉकडाउन में आकाशवाणी की खास भूमिका

उदयपुर। लोक प्रसारक सेवा आकाशवाणी केन्द्र उदयपुर ने लॉकडाउन के दौरान लगातार कॉरोना वॉरियर के रूप में काम किया। कार्यक्रम प्रमुख लक्ष्मण व्यास ने बताया कि कोरोना लॉकडाउन की वजह से लोग जब घरों में रहने को मजबूर थे उस समय आकाशवाणी ने गीतों के साथ ही जिम्मेदार लोगों की बातों को उन तक पहुंचाने का काम किया। ढाई महीने तक प्रतिदिन सांसद अर्जुनलाल मीणा, राजसमंद विधायक किरण माहेश्वरी, उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा, पुलिस महानिरीक्षक बिनिता ठाकुर, पुलिस अधीक्षक कैलाशचन्द्र विश्नोई, न्यायाधीश रिद्धिमा शर्मा, महापौर जीएस टांक, नगर विकास प्रन्यास सचिव अरुण कुमार हासीजा, अतिरिक्त जिला कलक्टर ओपी बुनकर सहित जनप्रतिनिधियों, प्रशासनिक व पुलिस अधिकारियों और विभिन्न सरकारी-गैर सरकारी संस्थाओं की बात को लोगों तक पहुंचाकर लोगों को जागरूक किया। केन्द्राध्यक्ष आईए काजी ने बताया कि लॉकडाउन में एक दिन भी केन्द्र बंद नहीं रहा। सभी अधिकारी, कर्मचारी नियमित अपने कार्य में संलग्न रहे। वरिष्ठ उद्घोषक दीपक मेहता, कार्यक्रम अधिकारी महेन्द्रसिंह लालस और संजय व्यास लगातार कार्यक्रम तैयार करने में व्यस्त रहे।

सत्यनारायण जिलाध्यक्ष

उदयपुर। विप्र चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज मेवाड़ चेप्टर के अन्तर्गत सत्यनारायण मेनारिया को उदयपुर जिलाध्यक्ष मनोनीत किया है। यह जानकारी चेप्टर के अध्यक्ष कृष्णकान्त शर्मा ने दी।

माधवानी बने कोर्डिनेटर

उदयपुर। उद्योग और सरकार के बीच सेतु पीएचडी चेम्बर अपेक्स बॉडी में उदयपुर के कोर्डिनेटर एम स्क्वायर प्रोडक्शन सीईओ मुकेश माधवानी को मनोनीत किया गया है। पीएचडी चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री के अध्यक्ष दिग्विजय ढाबरिया ने उन्हें यह जिम्मेदारी दी।

भाजपा ने घोषित किए जिलाध्यक्ष

जयपुर। कोरोना से धीमी पड़ी राजनीतिक गतिविधियां अब रफ्तार पकड़ने लगी हैं। भाजपा ने अपने शेष 2 जिलाध्यक्षों के नाम घोषित कर दिए। वीरेन्द्र पुरोहित को राजसमंद और श्रवण वर्मा को धौलपुर जिलाध्यक्ष घोषित किया गया है।

वीरेन्द्र पुरोहित

नीरजा मोदी स्कूल ने बांधे परिंडे

उदयपुर। नीरजा मोदी स्कूल परिवार ने निदेशिका साक्षी सोजतिया के नेतृत्व में पिछले दिनों 250 परिंडे लगाकर रोज उनमें पानी डालने का संकल्प लिया। विद्यालय प्राचार्य जॉर्ज ए. थॉमस ने बताया कि स्कूल परिसर और उसके आस-पास पक्षियों के लिए ये परिंडे बांधे गए।

शोक समाचार

उदयपुर। श्री मदनलाल जी जांगिड़ (जिवंता चिल्ड्रन हॉस्पीटल) का 12 मार्च को आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती चंदा देवी, पुत्र डॉ. सुनील जांगिड़, पुत्रियां संतोष देवी, मैना देवी, तुलसी देवी व सुनीता देवी सहित पौत्र-पौत्री व दोहित्र-दोहित्रियों का वृहद परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। नगर के प्रसिद्ध हलवाई श्री भरोसीलाल जी का 19 फरवरी को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र महादेव एवं शिवकुमार, पुत्रियां मधु, गीता देवी व ललिता सहित भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री मांगीलाल जी कसोदनिया (कुराबड़ वाला) का 20 फरवरी को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती ख्याली बाई, पुत्र हिम्मत कसोदनिया, पुत्री शारदा, पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का विशाल परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती ज्ञान कुमारी गौड़ पत्नी स्व. मदन जी गौड़ का 21 फरवरी को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र शिवजी गौड़(संयुक्त निदेशक शिक्षा विभाग), प्रेमशंकर पुत्री धारेश्वरी, पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का समृद्ध परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। समाजसेवी श्री जीतमल जी चपलोत (प्राईम के टी एस मर्चन्डाइस प्रा. लि.) का 24 मार्च को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र निशिथ चपलोत, पुत्रियां हेमलता, शशि व निशा सहित पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं।

उदयपुर। प्रमुख समाजसेवी एवं उद्यमी ठाकुर घनश्याम सिंह जी कृष्णावत ठिकाना-थाणा(मेवाड़) का 27 मार्च 2020 को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय भ्राता रावत मनोहर सिंह कृष्णावत, ठा. रघुवीर सिंह, पुत्र विरमदेव व युद्धराज सिंह सहित विशाल कृष्णावत परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री धर्मेन्द्र जी किशनानी की सहधर्मिणी श्रीमती सरिता जी किशनानी का 5 मई को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पति, पुत्र-पुत्रवधू तरूण-प्रीत एवं वृहद किशनानी परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्री प्रताप नारायण जी अग्रवाल की धर्मपत्नी श्रीमती शीलादेवी(85) का 5 अप्रैल को देहांत हो गया। वे अपने पीछे पुत्र संजय, पुत्रियां दीपा गर्ग, नीरा गुप्ता व पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का विशाल परिवार छोड़ गई हैं। वे महात्मा गांधी के परिवार से सम्बद्ध थीं।

उदयपुर। श्री कंवरलाल जी पाटनी(आर.के. मार्बल) की धर्मानुरागी धर्मपत्नी श्रीमती चतरदेवी पाटनी का 2 अप्रैल 2020 को देवलोकगमन हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पति, पुत्र अशोक पाटनी, सुरेश, विमल व अभिषेक पुत्रियां अनुपमा, रानू, संगीता, ममता, मानसी व नीलम सहित पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का समृद्ध एवं वृहद परिवार छोड़ गई हैं।

ऋषभदेव। कल्लाजी सम्प्रदाय के राष्ट्रीय संरक्षक एवं श्री कल्याण शक्तिपीठ मईया धाम के महन्त श्री गणेशलालजी रावल का 14 जून को देवलोकगमन हो गया। वे अपने पीछे शोक विह्वल धर्मपत्नी श्रीमती नर्बदा देवी, पुत्र महंत करूणेश्वर, जयप्रकाश, हनुमंत प्रसाद व विजयकुमार तथा पुत्री शशिकला सहित भरापूरा परिवार व विशाल भक्त समुदाय छोड़ गए हैं। उनके निधन पर सभी कल्याण शक्तिपीठों के महन्तों ने गहरा दु:ख व्यक्त किया है।

उदयपुर। जिला युवक कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष जयप्रकाश निमावत के पिताश्री रोड़ीरामजी का 11 अप्रैल 2020 को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पत्नी सावित्री देवी, पुत्र जयप्रकाश, पुत्रियां नीता, अरूणा व माधुरी तथा उनका वृहद परिवार छोड़ गए हैं। वे शहर जिला कांग्रेस कमेटी के सचिव थे। उनके निधन पर कांग्रेस नेताओं ने गहरा दु:ख व्यक्त किया है।

उदयपुर। श्री ज्ञानचंद जी वाधवानी(अनुपम वस्त्रालय) का 13 अप्रैल, 2020 को स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती लाजवंती देवी, पुत्र मुकेश व श्रवण, पुत्रियां मीता लिंजारा, नेहा भठिजा एवं उनका सम्पन्न परिवार परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती प्रेमदेवी जी कटारिया धर्मपत्नी स्व. बुधरमलजी कटारिया का 22 अप्रैल को गोलोकवास हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र गुरमुख कटारिया, पुत्रियां गुणवंती बत्रा, कविता मेहरचंदानी व उनका विशाल परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। समाजसेवी श्री विनय जी भाणावत की धर्मपत्नी श्रीमती आशाजी भाणावत का 23 अप्रैल को आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे शोक विह्वल पति, पुत्र धीरज, पुत्रियां यामिनी सहलोत, भूमिका जारोली व यशा वया सहित पौत्र, दोहित्र-दोहित्रियों का समृद्ध परिवार छोड़ गई हैं। वे धर्मपरायण थीं।

उदयपुर। समाजसेवी श्री जमनालाल जी दशोरा(फोटोग्राफर) का 2 जून को देहावसान हो गया। उन्होंने अपने सेवा कार्यों से नगर में एक खास पहचान बनाई। वे अपने पीछे शोकाकुल पत्नी श्रीमती इन्द्रा देवी, पुत्र लोकेश, योगेश व राजेश सहित पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

डूंगरपुर। श्री शुकदेवजी उपाध्याय (सेवानिवृत्त सहायक अभियंता) का 23 अप्रैल को स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती केसरदेवी, पुत्र अशोक उपाध्याय, पुत्रियां मधु शर्मा, तारा दवे व नयना पाण्डे सहित उदयपुर, बनकोड़ा व भासौर में विशाल परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती अमृता देवी वरदार पत्नी स्व. कन्हैयालाल जी वरदार का 25 अप्रेल को परलोकगमन हुआ। वे अपने पीछे पुत्र हेमराज व शंकरलाल तथा पुत्रियां कंकुदेवी व गंगादेवी तथा पौत्र, प्रपौत्र, दोहित्र-दोहित्रियों का सम्पन्न एवं समृद्ध परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्री सत्यप्रकाश जी दुबे(76) का 26 मई को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पत्नी श्रीमती शकुन्तला, पुत्र मधुकर व हिमकर दुबे तथा भाई-भतीजों व पौत्र-पौत्रियों का समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

कांकरोली। श्री रमाशंकर जी शर्मा(शर्मा हॉस्पीटल कांकरोली-भुवाणा) का 14 मई को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पत्नी श्रीमती रामकंवर देवी, पुत्र डॉ. अनिल, सुनील, डॉ. अजय, नवनीत, संजय, विजय, मनीष, पुत्रियां सुनीता व रचना तथा पौत्र-पौत्री तथा दोहित्र-दोहित्रियों का हरा-भरा संसार छोड़ गए हैं।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

आकाश वागरेचा

मो :- 94141-69241

EVEREST GROUP OF COMPANIES
SINCE 1963

एवरेस्ट ग्रुप ऑफ कम्पनीज

शुभलक्ष्मी बिल्डकॉन प्रा. लि.

सावा सर्जिकल प्रा. लि.

एवरेस्ट नेचुरो हर्ब प्रा. लि.

एवरेस्ट इंटरनेशनल होटल एंड रेस्टोरेंट

एवरेस्ट आशियाना बिजनेस प्रा. लि.

169-ओ रोड, भूपालपुरा, उदयपुर (राज.)

SML ISUZU
The right choice for Children!
SECURE AND COMFIER
Dedicated Racks for School Bags and Bottles
Hat-Racks & Grab Handels
Low Foot Steps for Easy Entry/Exit
Window Guard Rails for Children's Safety
SML ISUZU SCHOOL BUSES
SCHOOL BUS
For Sales Support, Call: +91 93198 41155 | 24x7 Toll Free No.:1800-419-8086
www.smlisuzu.com

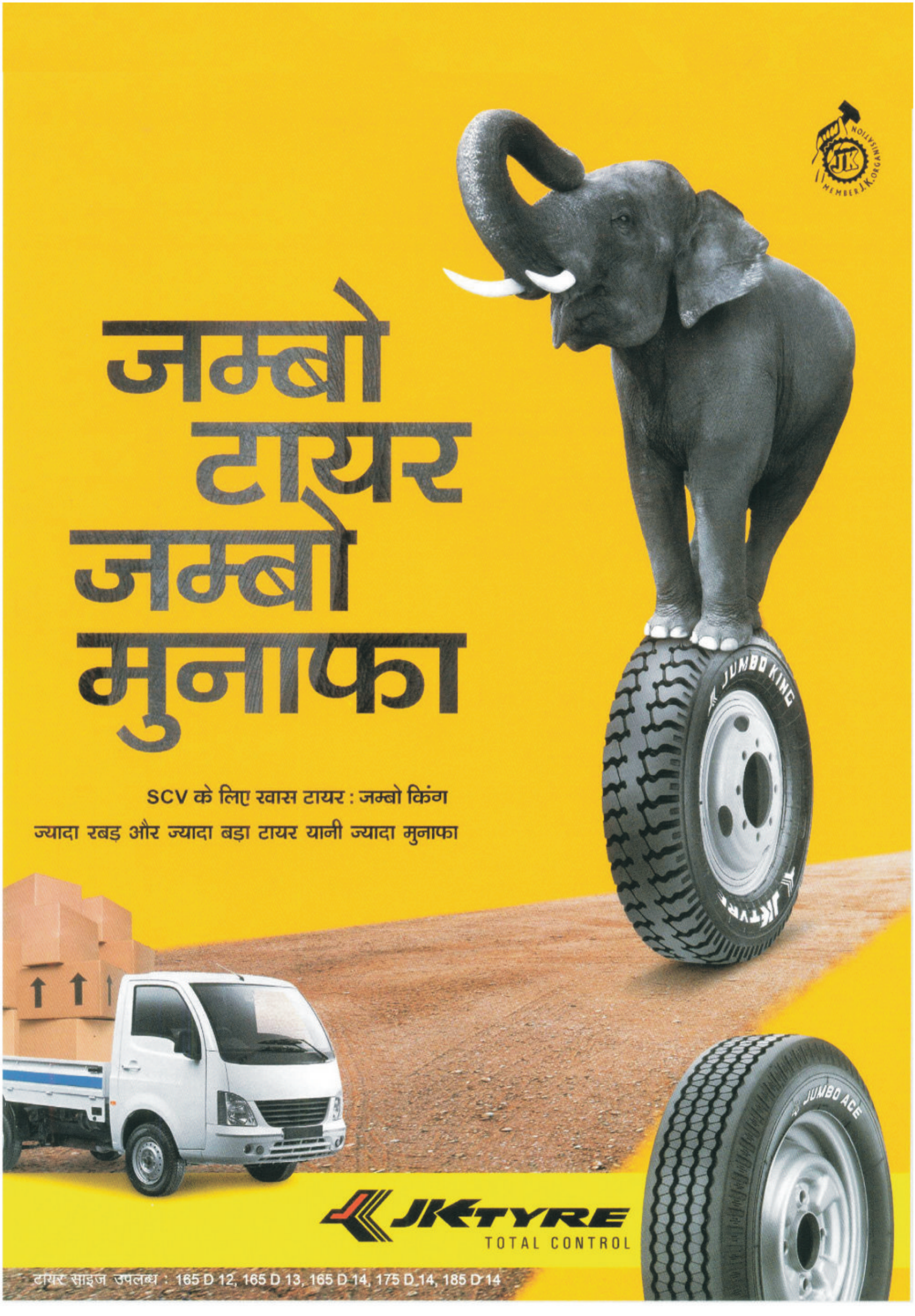
जम्बो टायर
जम्बो मुनाफा
SCV के लिए खास टायर : जम्बो किंग
ज्यादा रबड़ और ज्यादा बड़ा टायर यानी ज्यादा मुनाफा
JUMBO KING
JUMBO ACE
JK TYRE
TOTAL CONTROL
टायर साइज उपलब्ध : 165 D 12, 165 D 13, 165 D 14, 175 D 14, 185 D 14
MEMBER J.K. ORGANISATION

Rajasthan State Mines and Minerals Limited

(A Premier PSU of Government of Rajasthan)

CIN U14109RJ1949SGC000505
GSTIN 08AAACR7857H1Z0

Mining Prosperity from Beneath the Surface

OUR PRODUCTS

Rock Phosphate

- + 30% P_2O_5 Crushed Chips (-12mm size)
- + 31.5% P_2O_5 Crushed Chips (-12mm size)
- + 31.54% P_2O_5 Beneficiated Concentrate (200 mesh size)
- + 18% P_2O_5 Powder (RAJPHOS) An Organic Direct Application Fertilizer

Lignite

- Lignite with calorific value of 2800-3200 Kcal/Kg.
- GOI has allotted Lignite blocks having reserve of more than 400 million tons

Gypsum

- Run Of Mine (ROM) Gypsum-used in Cement industries and land reclamation
- Run of Mine (ROM) Selenite- used for manufacture of Plaster of Paris & Ceramics

Limestone

- +95% $CaCO_3$ Low Silica<1.5%, Steel Melting Shop (SMS) grade Limestone

Power

- 106.3 MW capacity Wind Energy Project in operation, with generating capacity of 1650 Lac KWH (units) grid quality clean power per year.
- Projects registered under CDM, UNFCCC (Kyoto Protocol) for CERs earnings.
- 5 MW Solar project also in operation at Gajner, Bikaner

Industrial Beneficiation Plant, Jhamar Kotra

Panoramic View of Giral Lignite Mines, Barmer

Ariel View of Solar Plant at Bikaner

Limestone Crushing Plant at Sonu Mines, Jaisalmer

Wind Energy Farm at Bada Bagh, Jaisalmer

OUR STRENGTHS

- Consolidating leadership in Fertilizer, Steel, Cement, and Power Sector.
- One of the Biggest Revenue Contributing PSU to state exchequer.
- Only Producer of SMS grade Limestone & largest producer of natural Gypsum & High Grade Rock Phosphate in the country.
- Achieved unprecedented growth in Productivity, Turnover, Revenue and Commanding Share in Industrial Mineral Sector of India.
- Established rare distinction of being the first PSU in India to earn foreign exchange by successfully trading Carbon Credit in International Market.
- Taking care for society under CSR. Contribution for Health & Medical, Education, Water Supply, Infrastructure and Community Development, Environment Protection and Plantation in Project Districts.

OUR PROJECTS

Petroleum & Natural Gas

- Wholly owned subsidiary company formed in the name of Rajasthan State Petroleum Corporation Limited for carrying out activities in Petroleum & Natural Gas Sector in Rajasthan.
- A joint venture Company in the name of Rajasthan State Gas Limited with joint venture partner GAIL Gas Ltd has been incorporated for developing City Gas Distribution network in Rajasthan.

Venture to mine out Lignite & Sand

- A joint venture company M/s Barmer Lignite Mining Company Limited has been incorporated with joint venture partner Rajwest Power Limited wherein RSMML hold 51% equity.
- A newly formed strategic business unit has been established to explore business opportunities in sand.

CORPORATE OFFICE

4, Meera Marg, Udaipur - 313 004, Tel. : +91-294-2428763-67, Fax : +91-294-2428770, 2428739, e-mail: info.rsmml@rajasthan.gov.in

REGISTERED OFFICE

C-89/90, Janpath, Lal Kothi Scheme, Jaipur - 302 015, Tel. : 0141-2743734, Fax : 0141-2743735

Visit us at www. rsmm. com